

30.00

Agust 2011

# मरयाम

नशे की आदत:  
ज़िल्लत और हलाकत

पांचवां मौसम

इमामे हसन<sup>अ०</sup>

दो दिन रेज़ा खोरी के



ईद

अली<sup>अ०</sup> से मोहब्बत

मोहब्बत में कमी-ज़्यादती

बेटी करे टॉप



# मरयम मैगज़ीन

का एक साल पूरा होने के मौके पर हम अपने  
सब्सक्राइबर्स के लिए लेकर आ रहे हैं

## खुशियों की सौगात

और शुरू कर रहे हैं

एक स्कीम जिसमें हर महीने 5 खुशानसीबों को मिलेंगे खूबसूरत  
ज्वेलरी सेट, घर के इस्तेमाल के सामान और भी बहुत कुछ...

बस पढ़ती रहिए मरयम मैगज़ीन और इंतज़ार कीजिए अपनी बारी का।

इस महीने जिन 5 खुशानसीबों को  
मरयम की तरफ़ से खूबसूरत ज्वेलरी दी जा रही है  
उनके नाम यह हैं:

अब्बास हैदर, जौनपुर

नूरुल हसन, लखनऊ

सलमान मुश्ताक, लखनऊ

फैज़ अहमद, रायबरेली

गज़ाला, रायबरेली





# पांचवा मौसम

■ दुर्दाना हैदर

वैसे तो साल में चार ही मौसम होते हैं...

लेकिन एक मौसम और भी है जिसे हम महसूस कर सकते हैं। इस मौसम में अगर कभी आप दिल की खिड़की खोलें तो ऐसा लगता है कि ताज़ा और ठंडी हवा से आप नहा गए और आपकी रूह तर व ताज़ा हो गई।

लेकिन इसके साथ ही एक अजनबी लेकिन जाना-पहचाना सा एहसास भी होता है! कुछ लोग इस खूबसूरत एहसास को हासिल करने के लिए बरसों इंतज़ार करते हैं लेकिन...

रमज़ानुल मुबारक भी इन्हीं हवाओं में से एक है जो अर्श की रूहानी खुशबुओं को समेट कर फर्श वालों तक पहुंचाती है।

कभी आयाते इलाही के तरन्नुम के साथ!

तो कभी कुनूत के लिए उठने वाले हाथों के साथ!

कभी आंखों से जारी पाकीज़ा अश्कों के साथ!

तो कभी शबे क़द्र के साथ!

सहरी, इफ़्तारी, अज़ान और शबे क़द्र के साथ!

कुरआन की तिलावत, मुनाजात और दुआ के साथ!

उन लोगों के साथ जो अपने जिस्म की थकावट नमाज़ पढ़ कर दूर करते हैं!

और कभी उन लोगों के साथ जो दिल की गहराईयों से ऐसे सारे लोगों के हज़ूर मुलतमिस दुआ हैं!

उन पुरजोश बच्चों के साथ जो नमाज़े मग़रिब के बाद मस्जिद में नमाज़ियों को इफ़तार कराते हैं!

उस नौजवान के साथ जो हाथ में कुरआन थामे कुरआन ख़वानी की महफ़िलों में शरीक होता है!

उस मुक़द्दस कमज़ोरी और सुस्ती के साथ जो इफ़तार के वक़्त तक रोज़ेदार पर

तारी हो जाती है!

कभी मेज़बान की इस पुरख़ुलूस कोशिश के साथ जब वह इफ़्तारी का दस्तरख़्वान सजाने के लिए एहतैमाम करता है!

रमज़ान के मुबारक महीने में हर चीज़ और हर जगह पर ख़ास माहौल पैदा हो जाता है। जी हां! यही वह अजनबी मगर जाना-पहचाना सा एहसास है। ऐसे जैसे दरियाए रहमत की लहरें धीरे-धीरे हमारे वजूद से टकरा रही हों। जैसे एक मुक़द्दस फ़िज़ा, मुक़द्दस नूर हमारे वजूद की खिड़कियों, दरवाज़ों से दाखिल होकर रूह को खुशबुओं में गोते दे रहा हो। जैसे एक दिल को छू जाने वाला मुक़द्दस सुख़र दिल व जान की गहराईयों में उतरता जा रहा हो।

माहे रमज़ान का ज़िक्र ही मज़ेदार है।

वह साल में आने वाले चार मौसमों के अलावा कोई और ही मौसम है।

आइए! सोचें कि हम और आप इस मौसम में क्या करते हैं और हमें क्या करना चाहिए। यह रूहानी महीना पूरी दुनिया पर सूरज की किरनों की तरह है। क्या इसकी किरनों के ज़रिए हमें अपने रूह को नुक़सान पहुंचाने वाले जरासीम का ख़ात्मा नहीं करना चाहिए?

याद रखें! जिस तरह एक बाग़ को, एक गुलदान को “पानी” की ज़रूरत होती है उसी तरह हमारी रूह को भी ज़रूरत है ‘आवे हयात’ की!

तो फिर सब बताइए ‘यह रूह को ज़िंदगी देने वाला चश्मा’ कहां है?

और हमारे दिलों को कौन ज़िंदा कर सकता है?

जी हां!

यही साल का पांचवां मौसम!

रमज़ान...वह मुबारक महीना जिसमें रोज़ेदार के गुनाह माफ़ किए जाते हैं।

उसकी बातें, उसकी सांसें और उसकी नींद तक इबादत बन जाती है।

रमज़ान





# मरयाम

## MARYAM

A Socio-Cultural &amp; Religious Monthly Magazine

July  
2011

### Editor

M. Hasan Naqvi

### Editorial Board

M. Fayyaz Baqir  
Akhtar Abbas Jaun  
Qamar Mehdi  
Ali Zafar Zaidi

### Managing Editor

Abbas Asghar Shabrez

### Executive Editor

Fasahat Husain

### Assist. Exec. Editor

M. Aqeel Zaidi

### Contributors

Imtiyaz Abbas Rizwan  
Azmi Rizvi  
Batoool Azra Fatima  
M Mohsin Zaidi  
Tauseef Qambar

### Graphic Designer

 Siraj Abidi  
9839099435

### Typist

S. Ifham Ahmad

### इस महीने आप पढ़ेंगी...

अख़लाकी बीमारियों का इलाज	29
अली <sup>अ०</sup> से मोहब्बत	16
बेटी करे टॉप	14
ब्रेन का कंप्यूटर मॉडल	26
दिमागी ताक़त को बाकी रखिए	13
पकौड़ी (डिशा)	32
ईद	41
घरेलू खरीदारी	18
हॉट	38
भरोसा (कहानी)	36
कुरआन और इमाम ज़माना (2)	9
जनाबे ख़दीजा <sup>अ०</sup>	8
मोहब्बत में कमी-ज़्यादती	5
इमामे हसन <sup>अ०</sup>	22
नशे की आदत: ज़िल्लत और हलाकत	33
पांचवां मौसम	3
तफ़्सीर	20
आज़ादी: इस्लाम की निगाह में	11

### खुदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान है...

यूं तो सारे ही महीने खुदा के हैं लेकिन माहे रमज़ान के बारे में ख़ास कर कहा गया है कि खुदा का महीना है। रसूले इस्लाम<sup>अ०</sup> की हदीस है कि यह खुदा का महीना है, इसका मतलब यह है कि यह महीना इबादत, इस्तग़फ़ार, तौबा, कुरआन की तिलावत, दुआ, पाकीज़गी, गुनाहों से दूरी, नेक कामों की तौफीक, दूसरों की मदद, यतीमों का ख़्याल, ग़रीबों से हमदर्दी और सबसे बढ़कर अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी से बाहर निकल कर एक पाक-साफ़ ज़िंदगी की शुरुआत का महीना है।

इस महीने से कौन कितना फ़ाएदा उठा पाता है यह तो अपने-अपने नसीब, अपनी-कोशिश और अपनी-अपनी तौफीक की बात है। वरना हम में हर एक अक्सर हर साल एक-दो नहीं बल्कि तीस-तीस रोज़े रखता है लेकिन महीना पूरा होने के बाद जब पीछे मुड़कर देखते हैं तो वहीं खड़े नज़र आते हैं जहां माहे रमज़ान से पहले थे। जब तक रोज़े वैसे न हों जैसे बीबी फ़ातिमा<sup>अ०</sup> ने रखने के लिए कहा है तब तक रोज़ों से वह काम नहीं लिया जा सकता जिसके लिए माहे रमज़ान को इतना अज़ीम और मुबारक महीना बताया गया है।

इस साल खुदा हमें तौफीक दे कि हम वैसे रोज़े रखें जैसे रोज़े खुदा हम से चाहता है।

‘मरयम’ का पिछले साल इसी मुबारक महीने में पहला इशू आया था। देखते-देखते एक साल कैसे गुज़र गया बिल्कुल एहसास ही नहीं हो सका।

आप सब ने पिछले एक साल में ‘मरयम’ को सब्सक्रिप्शंस, आर्टिकल्स, लैटर्स, फोन काल्स, एडवाइसेस और सजैशंस की सूरत में जो प्यार और खुलूस दिया है उसके लिए हम आप सब के दिल से शुक्रगुज़ार हैं। सबसे बढ़कर खुशी हमें इस बात की होती है कि ‘मरयम’ ने आप सब के बीच अपनी एक जगह बना ली है। हमें उम्मीद है कि आपकी यह सपोर्ट आगे भी इसी तरह ‘मरयम’ को मिलती रहेगी...

‘मरयम’ में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नहीं है।

‘मरयम’ में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और ‘मरयम’ में छपे लेख और तस्वीरें ‘मरयम’ की प्रॉपर्टी हैं।

इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले ‘मरयम’ से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। ‘मरयम’ में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।

संपादक ‘मरयम’ के लिए आने वाले कंटेंट्स में ज़रूरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Swastika Printwell Pvt. Ltd., 33, Cant. Road, Lucknow and published from 234/22 Thavai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006  
email: maryammonthly@gmail.com



# मोहब्बत

में

## कमी-ज्यादती

■ गुलज़ार फातिमा

मोहब्बत करता है और उसकी ख्वाहिश यह होती है कि दूसरे लोग भी उससे मोहब्बत करें, उसको चाहें। इंसान की इसी खुसूसियत की तरफ़ अगर ध्यान दिया जाए तो उसकी शख्सियत में काफी बड़े-बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।

इस्लाम ने भी बच्चों के साथ मोहब्बत से पेश आने पर जोर दिया है। खुद रसूल<sup>०</sup> की ज़िंदगी में ऐसे बहुत से नमूने मिलते हैं जो बच्चों के साथ मोहब्बत से पेश आने की अहमियत को बताते हैं। रसूल<sup>०</sup> ने

फ़रमाया, “अपने बच्चों के साथ मोहब्बत करो और उन पर रहम करो।”<sup>(1)</sup>

### मोहब्बत के फायदे

मोहब्बत इंसान की नेचरल ज़रूरत है। बच्चा बड़ों से ज़्यादा मोहब्बत का भूखा होता है। उसके लिए इस बात की अहमियत नहीं होती कि वह महल में रह रहा है या किसी मामूली घर में, लेकिन उसका पूरा ध्यान इस बात की तरफ़ होता है कि कौन उसे चाहता है और कौन उसे नहीं चाहता।

### 1- रुह के बैलेंस के लिए असरदार

यह बात साइंसी ऐतबार से भी साबित है कि मोहब्बत इंसान की नेचरल ज़रूरत है और इंसान की नेचरल ज़रूरत के पूरा होने और न होने से

**बच्चों** की परवरिश के अलग-अलग तरीके हैं। कभी उनकी परवरिश खुद को आइडियल बना कर की जाती है तो कभी प्यार व मोहब्बत से उनकी शख्सियत को संवारा जाता है। और ज़रूरत पड़ने पर नाराज़गी जताके उनको गुलियों से रोका जाता है ताकि वह एक अच्छे और तहज़ीब याफ़्ता इंसान बन जाएं। पिछले इशू में परवरिश में आइडियल की अहमियत पर बातचीत हुई थी और अब देखना है कि परवरिश में मोहब्बत की क्या अहमियत है?

### मोहब्बत

मोहब्बत हर इंसान की ज़रूरत है। हर इंसान को ज़ेहनी और साइकोलोजिकल लिहाज़ से मोहब्बत की ज़रूरत होती है। इंसान का नेचर यह है कि वह खुद से







उस पर काफी असर पड़ता है। अगर किसी शख्स या बच्चे को भरपूर ध्यान और मोहब्बत मिलती है तो वह जिंदगी में पुर उम्मीद और पॉजिटिव सोच वाला होता है, मुश्किलों का सामना करने का हुनर खुद बखुद उसमें आ जाता है लेकिन वही शख्स अगर इस एहसास में फंसा हो कि लोग उसे पसंद नहीं करते, उससे मोहब्बत नहीं करते तो इस बात का उसकी शख्सियत पर बहुत ही बुरा असर होता है। वह खुद को अकेला फील करता है और उसका सेल्फ-कॉन्फिडेंस खत्म हो जाता है। जिसके नतीजे में वह छोटी से छोटी मुश्किल का सामना करने के क़ाबिल भी नहीं होता।

## 2- जिस्म की सलामती

अगर इंसान ज़ेहनी ऐतबार से पुर सुकून होता है तो उसका उसकी सेहत पर सीधा असर पड़ता है। मोहब्बत के साए में पलने वाले बच्चों की सेहत उन बच्चों के मुक़ाबले में कहीं ज्यादा अच्छी होती है जो मोहब्बत जैसी नेमत से महरूम होते हैं।

## 3- मोहब्बत करना सीख लेता है

बच्चा मोहब्बत के माहौल में परवान चढ़ता है तो उसका नतीजा यह होता है कि उसे मोहब्बत करना आ जाता है। उसका दिल दूसरे इंसानों की मोहब्बत से भरा हुआ होता है और वह उनके लिए बहुत कुछ करके अपने समाज की ख़िदमत का जज़्बा रखता है।

## 4- मोहब्बत का इज़हार बहुत ज़रूरी है

ऐसे पैरेंट्स बहुत कम होंगे जो अपने बच्चों से मोहब्बत न करते हों लेकिन यह काफी नहीं है यानी दिल में छुपी हुई मोहब्बत को दिखाना भी बहुत ज़रूरी है। मोहब्बत को दिखाना भी कोई ऐसा मुश्किल काम नहीं है जिसे न किया जा सके। इसके लिए यही काफी है कि एक मोहब्बत भरी निगाह अपने बच्चे पर डाल दीजिए, वह आपके

दिल के हाल से बाख़बर हो जाएगा या उसे चूमना, उसे प्यार से गोद में उठा लेना, उसकी पसंद-नापसंद का ख़्याल रखना... यह सब मोहब्बत का इज़हार ही तो है।

## मोहब्बत के नुकसान

जिस तरह मोहब्बत परवरिश के लिए ज़रूरी है बिल्कुल उसी तरह उसकी ज्यादाती भी बच्चे के लिए बुरे असर रखती है। इसलिए ज़रूरी है कि इसी बात का ध्यान रखा जाए कि न मोहब्बत हद से ज्यादा हो और न ज़रूरत से कम।

## मोहब्बत में भेदभाव

भेदभाव रखना और बच्चों के बीच फर्क करना बहुत ही नुकसानदेह है। रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> हमेशा लोगों के बीच फर्क रखने से बचते थे और लोगों को भी ऐसा करने से मना करते थे। आपके सारे सहाबी मारेफ़त के अलग-अलग दर्जों पर थे यानी किसी का मुक़ाम ज्यादा बुलंद था तो किसी का कम लेकिन किसी को भी कभी यह एहसास नहीं हो पाया कि उनके बीच कोई फर्क है। उनमें से हर एक यह समझता था कि वह खुद रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> का करीबी सहाबी है।

रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> भेदभाव रखने को कितना बुरा समझते थे इसका अंदाज़ा इस वाक़े से हो जाता है। रिवायत है कि एक आदमी ने रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> के सामने अपने एक बच्चे को चूमा जबकि उसका दूसरा बच्चा भी वहीं मौजूद था। रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> बहुत नाराज़ हुए और कहा कि तुमने बराबरी का ख़्याल क्यों नहीं किया?

चूमना मोहब्बत की निशानी है और





बच्चा मोहब्बत के मामले में बहुत सेंसिटिव होता है। वह सिर्फ चूमने को देखता है, उस चूमने के पीछे क्या वजह है उससे उसे कोई सरोकार नहीं होता और यही बात वजह बनती है कि बच्चा हसद-जलन की तरफ कदम बढ़ा देता है और उसके अंदर गुलत सोचें परवान चढ़ने लगती हैं।

#### मोहब्बत की कमी

साइकोलोजिकल एक्सपर्ट्स का यह मानना है कि बहुत सी ज़ेहनी और रूहानी बीमारियों की जड़ मोहब्बत की कमी है जिसकी वजह से लोग कॉम्पलेक्स का शिकार हो जाते हैं।

#### मोहब्बत की कमी से होने वाले नुकसान

1- मोहब्बत की कमी से बच्चा एहसास कमतरी का शिकार हो सकता है।

2- आगे चलकर मुश्किलों का सामना करने और उनको हल करने में मुश्किल होती है।

3- कॉम्पलेक्स का शिकार हो जाता है। कभी-कभी खुदकशी की तरफ भी कदम बढ़ जाते हैं।

4- अल्लामा इब्राहीम अमीनी का नज़रिया यह है कि मोहब्बत के एहसास से ज़ेहनी सुकून मिलता है और ज़ेहनी सुकून जिस्मानी सलामती लेकर आता है। इसलिए मोहब्बत की कमी से जिस्मानी सलामती ख़तरे में पड़ जाती है और भूख न लगना, बदगुमानी, बेजा उम्मीदें, नाउम्मीदी जैसी बीमारियां पैदा हो जाती हैं।

#### मोहब्बत की ज़्यादती

जिस तरह मोहब्बत की कमी से नुकसान पहुंचता है उसी तरह मोहब्बत की ज़्यादती भी नुकसानदेह है। इस बारे में इमाम बाकिर<sup>र</sup> फ़रमाते हैं कि “सबसे बुरा बाप वह है जो बच्चों से नेकी और मोहब्बत में हद से आगे बढ़ जाए...”।

#### मोहब्बत की ज़्यादती के नमूने

1- बच्चों की बीमारी में कुछ पैरेंट्स इतना ज़्यादा परेशान हो जाते हैं कि उनकी ज़िंदगी ठप होकर रह जाती है। हर वक़्त फ़िक्र करते रहना, सोचते रहना, परेशान रहना या गुस्सा

करते रहना और आंसू बहाना न सिर्फ़ यह कि बच्चे की बीमारी को ठीक नहीं करता बल्कि दूसरी तरफ़ उसे यह भी समझा जाता है कि अब अगर वह जो कुछ भी चाहेगा उसे मिल जाएगा। इस तरह बच्चा ज़िद्दी हो जाता है। कभी-कभी तो बच्चा अपनी बातों को मनवाने के लिए खुद को मरीज़ भी दिखाने लगता है ताकि आसानी से उसकी मांग पूरी हो जाए और अगर उसकी मांग पूरी नहीं होती तो उसे लगता है कि उसकी तौहीन की जा रही है। एक एक्सपर्ट ने एक औरत की दास्तान नक़ल की है जो बड़ी अजीब और सीख देने वाली है। एक औरत ने अपनी पड़ोसी से बार-बार इस बात की शिकायत की कि उसके रेडियो की आवाज़ बहुत तेज़ रहती है, उसे कुछ कम रखा करो। मगर पड़ोसी ने उसकी बात का कोई असर नहीं लिया और इतना ही नहीं बल्कि उसकी बात मानने से साफ़ इंकार कर दिया। इस बात से परेशान होकर उस औरत ने खुदकशी कर ली। जब इस एक्सपर्ट ने इस टॉपिक पर रिसर्च की तो पता चला कि वह औरत अपने पैरेंट्स की लाडली बेटी थे और हमेशा उसकी हर बात मानी जाती थी। इसलिए यह इंकार उसको इतना भारी पड़ा कि कि उसने जान दे दी।

2- दूसरा वाक़ेआ बच्चे के खेलते वक़्त उसका गिरना या चोट लगना और उस पर पैरेंट्स का रिएक्शन है। अगर बच्चे के गिरने और चोट खाने के वक़्त पैरेंट्स का रिएक्शन ठीक होता है तो बच्चा भी फ़ौरन उठ कर दोबारा खेलने लग जाता है। लेकिन अगर वही पैरेंट्स अपना सारा काम छोड़ कर दौड़ते हुए बच्चे की तरफ़ दौड़ते हैं, उसे गोद में उठा कर ज़मीन या दीवार को मार कर बदला लेते हैं तो बच्चा भी ज़रूरत से ज़्यादा शोर मचाता है और अगर ऐसा बार-बार दोहराया जाए तो बच्चा खुदपसंदी का शिकार हो जाता है और बहुत जल्दी घबरा जाता है। इस तरह उसके अंदर धीरे-धीरे बदला लेने की नुक़सानदेह सिफ़त भी परवान चढ़ने लगती है।

1- मीज़ानुल मुल्क, 8/36-39 ●



## KAZIM Zari Art

All Kinds of  
Sarees, Suits  
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg  
Kazmain Road  
Lucknow

Contact No.  
0522-2264357  
9839126005





# जनाबे खदीजा स०

## ■ अज़मी रिज़वी

“खदीजा उस वक़्त मुझ पर ईमान लाई जब लोग कुफ़्र के आलम में थे, उन्होंने उस वक़्त मेरी नुबूवत की तसदीक़ की जब लोग मुझे झुठला रहे थे और जब लोगों ने मुझे महरूम कर दिया था तब उन्होंने अपनी दौलत मेरे हवाले कर दी।”

रसूल ख़ुदा के यह जुमले जनाबे खदीजा के बारे में हैं। जनाबे खदीजा की वफ़ात के बाद पैग़म्बरे रहमत<sup>०</sup> हमेशा उन्हें याद किया करते थे। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि जनाबे खदीजा की ज़िंदगी में ग़ौर व फ़िक्र करें कि उन्होंने ऐसा कौन सा कारनामा अंजाम दिया था कि ख़ुदा के अज़ीम रसूल उनकी वफ़ात के बाद उन्हें इस तरह याद करते थे।

जनाबे खदीजा का सबसे बड़ा कारनामा ऐसे वक़्त में रसूल ख़ुदा<sup>०</sup> पर ईमान लाना था जब पूरी दुनिया कुफ़्र और शिर्क के अंधेरे में डूबी हुई थी।

उस वक़्त बहुत से ऐसे लोग मौजूद थे जो आसमानी किताबों के बारे में जानने वाले थे, जिनकी ज़िंदगी इबादतों में गुज़र रही थी और जो ख़ानए काबा, हज और दूसरे मज़हबी कामों के ज़िम्मेदार समझे जाते थे लेकिन जब रसूल<sup>०</sup> ने नुबूवत का ऐलान किया तो उनमें से बहुत से लोगों ने आपकी बातों पर यकीन नहीं किया और बहुत से लोग शक की हालत में रहे लेकिन यह जनाबे खदीजा की मारफ़त थी कि वह पहले दिन ही रसूल<sup>०</sup> पर ईमान ले आई।

इसके अलावा आपने पूरी माल व दौलत रसूल<sup>०</sup> के हवाले कर दी ताकि वह उन लोगों की मदद कर सकें जिनका इस्लाम लाने की वजह से सोशल बाइकाट कर दिया गया था, वह बेरोज़गार हो गए थे और बहुत परेशानी और ग़ुरबत की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

रसूल ख़ुदा<sup>०</sup> पर ईमान लाने और उनकी मदद करने में जनाबे खदीजा ने बहुत सी कुरबानियां दी हैं। उनमें से एक कुरबानी अपनी समाजी और स्टेटस की कुरबानी थी। आप अपने स्टेटस के किसी भी शख्स से शादी कर सकती थीं। लेकिन आपने उस ख़राब माहौल में पाकीज़गी और अमानतदारी की वजह से रसूल ख़ुदा<sup>०</sup> से शादी की। यकीनन आपको अपने ख़ानदान वालों और समाज के दूसरे लोगों की मुख़ालिफ़तों का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन इन सारी मुख़ालिफ़तों के बावजूद आपने एक ऐसे शख्स से शादी की जिसके पास दुनिया के माल से कुछ भी नहीं था लेकिन फ़ज़ाएल व कमालात का समन्दर था। इस तरह आपने मादूदीयत और दुनियावी चमक-दमक पर मानवियत को तरजीह दी।

यह बात भी साफ़ है कि आपका जज़्बाती फ़ैसला नहीं था क्योंकि जज़्बाती फ़ैसला करने वाले आंख बंद करके किसी रास्ते पर चल पड़ते हैं और जब उस रास्ते की मुश्किलें सामने आती हैं तो पीछे हट जाते हैं और अपने फ़ैसले पर पछताते हैं। जनाबे खदीजा ने ज़िंदगी भर मुश्किलों का सामना किया, अपने ख़ानदान और समाज वालों के ताने बरदाशत किए, आपका बाइकाट कर दिया गया लेकिन आप इस्लाम की तबलीग़ में रसूल इस्लाम<sup>०</sup> के साथ-साथ रहीं यहां तक कि इसी रास्ते में आपकी शहादत भी हो गई।

जनाबे खदीजा जिस माहौल में ज़िंदगी गुज़ार रही थीं उस माहौल में औरत को बहुत पस्त मख़्लूक़ समझा जाता था जो सिर्फ़ शायरी का सबजेक्ट थी, जंगों में मर्दों को लड़ने पर उकसाती थी और उनकी ज़िंदगी का मक़सद हर तरह से उनकी ख्वाहिशों को पूरा करना था लेकिन ऐसे माहौल में जनाबे खदीजा ने पाकीज़गी की ज़िंदगी गुज़ारी और अक्ल व फ़िक्र का सहारा लेकर ख़ुदा की राह में ज़िंदगी बसर की। इस तरह आपने पूरी दुनिया को और ख़ास तौर पर औरतों को यह पैग़ाम दिया कि औरत अगर चाहे तो इन्तेहाई बुरे माहौल में रहकर भी मज़बूत और बुलंद किरदार की मालिक बन सकती है। ●

# خلیجی





# कुरआन और इमामे ज़माना <sup>अओ</sup> 2

■ फ़साहत हुसैन

पिछले इशू में हमने कुरआन की दो आयतों की तफ़सीर पेश की थी जिनमें इमामे ज़माना<sup>अओ</sup> और उनकी हुकूमत का जिक्र किया था। यह इस सिलसिले का दूसरा आर्टिकल है।

“अल्लाह ने तुम में से ईमान रखने वालों और नेक अमल अंजाम देने वालों से वादा किया कि उन्हें ज़मीन में इसी तरह अपना जानंशीन बनाएगा जिस तरह पहले वालों को बनाया है और उनके लिए इस दीन को ग़ालिब बनाएगा जिसे उनके लिए पसंदीदा करार दिया है और उनके ख़ौफ़ को अमन से बदल देगा कि वह सब सिर्फ़ मेरी इबादत करेंगे और किसी तरह का शिर्क न करेंगे और उसके बाद भी कोई काफ़िर हो जाए तो हकीकत में वही लोग फ़ासिक और बुरे किरदार हैं।”

इस आयत में खुदा ने अपने बंदों को खुशख़बरी दी है कि अगर वह सच्चा ईमान रखते हों और उसके साथ नेक अमल भी अंजाम देते हों तो खुदा उनकी मदद करेगा। उन्हें अपना जानंशीन बनाएगा। खुदा के पसंदीदा दीन की हुकूमत होगी,

जुल्म और डर की ज़िंदगी गुज़ारने के बाद वह अमन व सुकून की ज़िंदगी गुज़ारेंगे और खुदा की सच्ची इबादत करेंगे।

यह आयत ऐसे लोगों के बारे में है जिनका ईमान सिर्फ़ उनके ज़ेहन और दिल ही में नहीं रहता है बल्कि वह अपने ईमान को अपनी रोज़ाना की ज़िंदगी अपनाते हैं। वह ज़िंदगी के हर मैदान में, चाहे कोई भी मैदान हो, एजूकेशन की बात हो या बिज़नेस और फ़ाइनेन्स की, घर की बात हो या समाजी कामों की, हर जगह खुदा की मर्ज़ी देखते हैं और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। खुदा दुनिया का कंट्रोल ऐसे ही लोगों के हाथों में देगा और वह ज़मीन पर खुदा की हुकूमत कायम करेंगे।

आयत में ‘पसंदीदा दीन’ का मतलब इस्लाम है क्योंकि ग़दीरे ख़ुम में हज़रत अली<sup>अओ</sup> की इमामत के ऐलान के बाद नाज़िल होने वाली ‘आयते इक़माल’ में खुदा ने फ़रमाया है “और तुम्हारे लिए दीने इस्लाम को पसंदीदा बना दिया है।”<sup>(1)</sup>

और आखिरी ज़माने में खुदा इसी दीन को सारे मज़हबों पर हावी कर देगा ‘लियुज़हिरहु

अलद् दीनि कुल्लिही’।<sup>(2)</sup>

ऐसी हुकूमत की एक मिसाल रसूल<sup>अओ</sup> की ज़िंदगी में सामने आई थी जब आपने अपने सच्चे सहाबियों के साथ मिलकर ऐसी ही हुकूमत बनाई थी। और ऐसे लोग जब भी खुदा की राह में क़दम बढ़ाएंगे तो खुदा उनकी मदद करेगा। क्योंकि खुदा का क़ानून है कि “जो हमारे रास्ते में क़दम बढ़ाएगा हम उसकी मदद करेंगे और उसे अपनी तरफ़ आगे बढ़ाने की हिदायत करेंगे।”

इसलिए खुदा का यह क़ानून उन तमाम लोगों के लिए है जो सच्चे ईमान और नेक अमल की दौलत से मालामाल होंगे। लेकिन इसके साथ ही दूसरा क़ानून यह है कि ‘खुदा उस वक़्त तक उस क़ौम की हालत नहीं बदलता है जब तक वह खुद अपनी हालत न बदले’ यानी अगर लोग कोशिश करके तरक्की करना चाहेंगे तो खुदा उनके बुरे हालात बदलेगा और उन्हें तरक्की और कमाल देगा लेकिन अगर कोई क़ौम सुस्ती और काहिली करेगी तो खुदा उस क़ौम को दी हुई नेमतें छीन लेगा और उन्हें पस्ती की गहराइयों में गिरा देगा।



# السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُحَمَّدٌ

इसलिए जब लोगों ने कोशिश की तो खुदा ने ज़मीन के एक हिस्से पर ही सही लेकिन ऐसी हुकूमत दी, जैसा कि रसूल के दौर में हुआ और उनके बाद जब लोगों ने खुदा की नाफरमानी की तो खुदा ने उनसे यह नेमत ले ली।

रसूल<sup>॥</sup> और उनके जानशीनों से हम तक पहुंचने वाली रिवायतों से मालूम होता है कि इस आयत का सबसे बेहतर और मुकम्मल नमूना रसूल<sup>॥</sup> के आखिरी जानशीन इमाम मेहदी<sup>॥</sup> की हुकूमत है जिसके बारे में रिवायतों में यह सारी खुसूसियतें बताई गई हैं कि आपके सहाबी ईमान और अमल के ऐतबार से अपने ज़माने में सबसे बेहतर होंगे, खुदा उन्हें पूरी ज़मीन पर हुकूमत देगा, उनकी हुकूमत में पूरा इस्लाम पूरी दुनिया में फैल जाएगा, जुल्म और ख़ौफ़ का नाम तक नहीं रहेगा बल्कि हर जगह ईसाफ़ और सच्चाई का

बोल वाला होगा, लोग ज़िंदगी के हर मैदान में सिर्फ़ खुदा की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी दूसरे का हुकूम नहीं मानेंगे। लेकिन ऐसा भी नहीं है कि दुनिया का हर शख्स ईमान और अमल के ऐतबार से ऐसा ही होगा क्योंकि इंसान के पास जब तक अपना इरादा, इख़्तियार और दुनियावी ख़्वाहिशें हैं वह सच्चा या ग़लत हर रास्ता अपना सकता है। इसलिए कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो खुदा के हुकूम को नहीं मानेंगे और खुदा उनको सख़्त अज़ाब देगा। लेकिन तादाद के ऐतबार से वही लोग ज़्यादा होंगे जो खुदा पर ईमान रखने वाले और उसका हुकूम मानने वाले होंगे और पूरी दुनिया पर ऐसे ही लोगों का कंट्रोल होगा। इस आयत से यह नतीजा भी निकलता है कि जब दुनिया में सच्चा दीन फैल जाएगा तो ख़ौफ़ और डर का नाम तक मिट जाएगा और पूरी इंसानियत खुदा की बंदगी के

रास्ते पर अमन व सुकून के साथ तरक्की और क़माल की आखिरी मंज़िल तक पहुंचेगी।

कुरआन में इमामे ज़माना<sup>॥</sup> और उनकी हुकूमत के बारे में दूसरी आयतें भी हैं। लेकिन मरयम के दो इशूज़ में हमने तीन आयतें ही पेश की हैं। यह सारी आयतें और इनकी तफ़सीर जानने के लिए आप इमामे ज़माना<sup>॥</sup> से रिलेटेड किताबें देख सकते हैं।

हम अगले इशू में इस बारे में शिया और अहले सुन्नत की किताबों में पाई जाने वाली कुछ रिवायतें पेश करेंगे।

1-सूरए माएदा/3, 2-सूरए तौबा/33







■ अख़्तर अब्बास जौन

ह्यूमेन राइट्स या ख़ास तौर पर औरतों के हकों के बारे में बहस करने के लिए एक बुनियादी प्वाइंट की तरफ़ ध्यान ज़रूरी है और वह यह कि इंसान की आज़ादी का मतलब क्या है और उसकी आज़ादी की हदें क्या हैं?

इंसान की आज़ादी के बारे में अलग-अलग नज़रिए हैं ख़ास कर इस्लाम और वेस्टर्न स्कूल ऑफ़ थॉट के बीच इंसान की आज़ादी के बारे में कुछ बुनियादी फ़र्क़ पाए जाते हैं। इस आर्टिकल में आज़ादी के बारे में इस्लाम के नज़रियों को खुलासे के तौर पर पेश किया जा रहा है और उसके बाद वाले इशू में इस बारे में वेस्टर्न नज़रियों और उनके मक़सद को बयान किया जाएगा।

# आज़ादी

## इस्लाम की निगाह में

॥ मरयम Aug 2011





### इंसान इख्तियार वाला है

इंसान को कुछ इस तरह से पैदा किया गया है कि उसे अपनी जिंदगी के रास्ते को चुनने और उसके मुताबिक अमल करने की छूट दी गई है। यह छूट अल्लाह की तरफ से इंसान के लिए एक बड़ा तोहफा है जिसके ज़रिए से इंसान का इम्तिहान भी लिया जाता है, इसी के ज़रिए इंसान कमाल और फज़ीलतें हासिल करके अज़ीम इंसानों में भी गिना जाने लगता है और इसी इख्तियार को ग़लत इस्तेमाल करके इंसान कभी अपने आपको इतना गिरा लेता है कि वह न सिर्फ दुनिया की नज़रों में बल्कि खुद अपनी नज़रों में भी हकीर हो जाता है।

### आज़ादी और इख्तियार कुरआन की निगाह में

कुरआन ने इंसान को आज़ाद बताया है लेकिन सिर्फ इस हद तक कि वह शैतान या अपने नफ़्स और ख्वाहिशों का गुलाम होकर न रह जाए। इंसान की जिंदगी का सबसे अहम और नाजुक मसला दीन है लेकिन इस्लाम के हक होने के बावजूद भी अल्लाह की तरफ से लोगों को इस सच्चे दीन को चुनने पर मजबूर नहीं किया गया। कुरआन की नज़र में अगर अल्लाह चाहता तो सब एक उम्मत होते और एक दीन की पैरवी करते। लेकिन कुरआनी लॉजिक में इंसान को दीन को कुबूल करने या कुबूल न करने में भी पूरी छूट दी गई और कहा गया, “दीन में किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं है। हिदायत, गुमराही से अलग और वाज़ेह हो चुकी है।”<sup>(1)</sup>

कुरआन ने दूसरी जगह कहा, “यकीनन हमने उसे रास्ते की हिदायत दे दी है, चाहे वह शुकुगुज़ार हो जाए या

नेमत की नाशुकी करने वाला हो जाए।”<sup>(2)</sup>

### आज़ादी: मासूमीन<sup>३०</sup> की निगाह में

यह एक हकीकत है जो समझ रखने वालों के लिए साफ़ है कि सारे नबी और ख़ास कर आख़िरी नबी पैग़म्बरे अकरम<sup>३०</sup> की बेसत का एक अहम मक़सद यह था कि वह इंसानों को जुल्म व सितम, जिहालत, नफ़्स परस्ती और शैतान परस्ती की कैद से आज़ाद कराएं।

आज़ादी के बारे में इमाम अली<sup>३०</sup> की वसियत का यह ख़ूबसूरत ज़ुमला हमेशा ज़ेहनों में रखने के लायक़ है कि इमाम<sup>३०</sup> ने फ़रमाया, “किसी के गुलाम बनकर न रहो कि अल्लाह ने तुम्हें आज़ाद पैदा किया है।”<sup>(3)</sup>

इमाम अली<sup>३०</sup> से रिवायत है कि आज़ाद इंसान हमेशा आज़ाद है चाहे अपनी आज़ादी के लिए उसे नुक़सान ही क्यों न उठाना पड़े<sup>(4)</sup>

इसी से मिलती-जुलती रिवायत इमाम सादिक<sup>३०</sup> से भी है। आपने फ़रमाया, “आज़ाद इंसान हर हाल में आज़ाद है चाहे उसके लिए उसे सख़्तियां और मुसीबतें ही क्यों न उठानी पड़ें।”<sup>(5)</sup>

उसूले काफ़ी में इमाम बाकिर की जुबानी ख़ानदाने कुरैश के एक आज़ाद इंसान का वाक़ेआ बयान किया गया है कि यज़ीद हज़ के सफ़र में मदीना आया हुआ था। उसने कुरैश के एक शख़्स को अपने पास बुलवाया। जब वह आया तो यज़ीद ने अपनी हुकूमत के नशे में उससे सवाल किया कि क्या तुम मानते हो कि तुम मेरे

गुलाम हो? अगर मैं चाहूं तो तुम्हें बेच दूं और चाहूं तो अपना गुलाम बनाकर रखूं? उस शख़्स ने जवाब दिया कि खुदा की क़सम! ऐ यज़ीद! ख़ानदान के ऐतबार से तुम कुरैश में मुझसे बेहतर नहीं हो और तुम्हारा बाप भी न जाहिलियत के ज़माने में और न इस्लाम के ज़माने में मेरे बाप से बेहतर था और न दीन के ऐतबार से तुम मुझसे बेहतर हो तो फिर मैं कैसे इस बात को मान लूं? यज़ीद ने कहा कि अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं तुम्हें क़त्ल कर दूंगा। उस शख़्स ने कहा कि मेरा क़त्ल हुसैन इब्ने अली<sup>३०</sup> के क़त्ल से बढ़ कर तो नहीं है। मैं तुम्हारी गुलामी का इक़रार नहीं कर सकता। यज़ीद ने हुक्म दिया और उसे क़त्ल कर दिया गया।<sup>(6)</sup>

अपनी आज़ादी और ग़ैरते नफ़्स की हिफ़ाज़त के लिए इंसान को अपनी जान भी देनी पड़े तो यह घाटे का मामला नहीं है।

### इंसानी आज़ादी के बारे में

### इमाम खुमैनी<sup>३०</sup> का बयान

इमाम खुमैनी इस बारे में फ़रमाते हैं, “हमारा मानना है कि कायनात का पैदा करने वाला सारी



हकीकतों को जानता है और हर चीज़ पर कादिर और हर चीज़ का मालिक है। इस हकीकत से हमें यह पता चलता है कि इंसान को सिर्फ़ अल्लाह के सामने सर झुकाना चाहिए और उसके सिवा किसी दूसरे की इताअत नहीं करनी चाहिए मगर यह कि उसकी इताअत खुदा की इताअत हो। इस बुनियाद पर किसी इंसान को हक़ नहीं है कि वह किसी दूसरे इंसान को अपने सामने सर झुकाने के लिए मजबूर करे। इस मज़हबी उसूल से हम इंसान की आज़ादी का सबक़ लेते हैं और हम यह सीखते हैं किसी इंसान को हक़ नहीं है कि दूसरे इंसान या किसी समाज या किसी क़ौम की आज़ादी को छीन ले। हमारा मानना है कि इंसान और समाज की तरक्की, कामयाबी और क़माल के लिए क़ानून बनाने का हक़ सिर्फ़ खुदा को है, ऐसे क़ानून जो नबियों के ज़रिए इंसानों तक भेजे गए हैं। इंसानों की परती और ज़िल्लत इस आज़ादी के छिन जाने और दूसरे इंसानों के सामने सर झुका देने की वजह से है। इसलिए इंसानों को चाहिए कि उन लोगों के खिलाफ़ उठ खड़े हों जो दूसरों को अपनी मर्जी के मुताबिक़ जीने पर मजबूर करना चाहते हैं और उनकी आज़ादी को छीनना चाहते हैं।<sup>(7)</sup>

#### पर्दा और आज़ादी

आज़ादी का मतलब हर तरह के क़ानून से आज़ाद होना नहीं है क्योंकि यह आज़ादी नहीं बल्कि यह सबसे बड़ी गुलामी है क्योंकि हर तरह के क़ानून से आज़ाद होने के बाद इंसान अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों और शैतान के हाथों कैद हो जाता है। इंसान सिर्फ़ खाने-सोने और ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए पैदा नहीं किया गया है कि आज़ादी के नाम पर उसे इस तरह के नारों से धोखा दिया जाए।

इंसान को एक बड़े मक़सद और अज़ीम इंसानी क़माल तक पहुंचने के लिए पैदा किया गया ताकि एक अच्छा इंसानी समाज बन सके। दीन का एक काम यह भी है कि इस रास्ते में जो रुकावटें हैं उन्हें दूर करे। इन्हीं रुकावटों में से एक बेहिजाबी या बेपर्दगी है जो न सिर्फ़ समाज के लिए नुक़सानदेह व ख़तरनाक है बल्कि खुद इंसान की साइकॉलोजी और घरेलू जिंदगी पर बुरे असर डालती है जिसके बारे में पिछले इशूज़ में अलग-अलग स्कॉलर्स की ज़बानी किसी हद तक बातें कही जा चुकी हैं।

यहां पर यह बात भी कहनी मुनासिब होगी कि हिजाब और पर्दा पाबंदी नहीं बल्कि सेक्योरिटी है। हिजाब के ज़रिए औरतें अपने विफ़ार व इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करती हैं। एक पाकीज़ा और साइकॉलोजिकल स्ट्रेस से दूर समाज बनाने में भी हिजाब और हिजाब करने वाली औरतों का बड़ा

रोल होता है।

इस्लामी हिजाब किसी भी इंसानी क़माल के रास्ते में रुकावट नहीं बनता। नमूने के तौर पर हम ईरानी समाज को देख सकते हैं। वैसे हम यह नहीं कहना चाहते कि ईरान की सारी औरतों का हिजाब एक आइडियल हिजाब है, हो सकता है कि कुछ औरतें हिजाब के क़ानून पर पूरी तरह अमल न करती हों लेकिन बहेरहाल हिजाब का क़ानून

सारी औरतों के लिए है और इस साल 2011 में यूनिवर्सिटी में एडमिशन के लिए मुल्की पैमाने पर जो कम्पटीशन होता है उसमें 60% लड़कियों ने हिस्सा लिया और 40% लड़कों ने। यह एक बड़ा नमूना है। हिजाब कामयाबियों और तरक्कियों में रुकावट नहीं बल्कि बहुत सारे क़मालों के लिए मददगार भी होता है।

1-सूरए बक्रा/256, 2-सूरए दहर/3, 3-नहजुल बलागा, मकतूब/31, 4-मतालिबुस सुज़ल/56, 5-काफी, 2/89, 6-उसूले काफी, 7. आज़ादी इमाम खुमैनी की निगाह में, पे 25

## सेहरी और इफ़्तार वाले तीन ग़ूप

सेहरी में खाने-पीने और मगरिब के वक़्त इफ़्तार के बारे में रोज़ेदार जो नियत करते हैं उस एतेबार से हम उन्हें तीन ग़ूपों में बांट सकते हैं:

1. वह लोग जो सेहरी या इफ़्तार में खाने-पीने की कोई ख़ास नियत नहीं करते बल्कि सिर्फ़ ज़ायक़ा लेने और पेट भरने के लिये खाते-पीते हैं।

2. वह लोग जो सेहरी या इफ़्तार में ज़ायक़ा लेने और पेट भरने के लिहाज़ से तो खाते-पीते हैं लेकिन साथ ही साथ यह भी जानते और समझते हैं कि सेहरी और इफ़्तार मुस्तहब है जिससे हम को रोज़ा रखने और खुदा की इबादत करने के लिये ताक़त मिलती है।

3. वह लोग जो सिर्फ़ यह नियत करके और समझते हुए सेहरी और इफ़्तार करते हैं कि यह मुस्तहब हं और खुदा इसको पसन्द करता है और इससे इबादत करने के लिए ताक़त मिलती है। इसके अलावा यह लोग सेहरी और इफ़्तार के बारे में मासूमीन<sup>30</sup> ने जो बातें बताई हैं उसी के एतेबार से सेहरी और इफ़्तार करते हैं जैसे सेहरी और इफ़्तार के वक़्त कुरआन की तिलावत, दुआएं पढ़ना, इन नेमतों पर खुदा का शुक्र अदा करना, ग़रीबों का ख़्याल रखना वगैरह।

### आप किस ग़ूप में आती हैं?



# बेटी करे टॉप



एक्जाम्स खत्म हो चुके हैं। नए एड्मिशन हो चुके हैं, समर वेकेशन के बाद एक बार फिर पढ़ाई शुरू हो चुकी है और आपके बच्चों ने स्कूल या कालिज जाना शुरू कर दिया है। सारे रिसर्चर्स यही कहते हैं कि बच्चों में वैसी ही क्वॉलिटीज़ पैदा होती है जिस तरह से उनको पाल-पोस कर बड़ा किया जाता है, जैसी एजुकेशन दी जाती है और जिस तरह उनकी परवरिश की जाती है। आप की बच्ची टॉप करे, यह भी एक बहुत बड़ा टॉस्क है। अपनी बच्ची को टॉप कराना है तो आपको अभी से और पूरे साल मेहनत करना पड़ेगी। इसके लिए आप क्या करें, बता रही हैं **बतूल अज़रा फ़ातिमा...**

## रुकावटें दूर करें

कई बार बरसों की गली-सड़ी रस्में, माँ-बाप के बेवजह के डर, तो कभी घरेलू मजबूरियाँ हर लड़की को कामयाब होने का मौका मिलने से रोक देती हैं। इस तरह हर लड़की पूरा दमखम होते हुए भी अधूरी पर्सनॉलिटी के साथ घरेलू और आसान कामों में उलझ कर रह जाती है। इस आर्टिकल में शायद आपको अपनी बेटी की पर्सनॉलिटी को निखारने का मौका मिल जाए। मैं यह भी कहना चाहूंगी कि माँ-बाप लड़के और लड़की दोनों को बराबर के मौके दें ताकि घर का लड़का ही नहीं, लड़की भी अपनी भरपूर क्वॉलिटीज़ के साथ आगे आए क्योंकि हमारा कल इन्हीं के हाथों में होगा। इसलिए आज इन्हें सुधारना हमारा काम है। चलिए सबसे पहले यह देखते हैं कि बच्चों को पढ़ाई में टॉप कैसे कराएं।

## ज़बरदस्ती न करें

अपनी बच्ची पर अपनी ख्वाहिश कभी न

थोपें, चाहे वह सबजेक्ट हो, या खाना खिलाना हो या कोई भी दूसरी चीज़, उसको सही रास्ता दिखाने में उसकी मदद करें। उससे बात-चीत करती रहें, उसकी प्रोग्रेस और मोटिवेशन में उसकी एर्नजी, नज़रों और फ़ीलिंग्स को समझने की कोशिश करें। उसके इंटरैस्टिंग सबजेक्ट और कठिन सबजेक्ट में आप उसे समझने की कोशिश करेंगी तो वह ज़रूर आप को जता देगी कि उसे कहाँ एक्सट्रा टीचिंग्स की ज़रूरत है। ज़बरदस्ती करने से बच्चों के दिल में नफ़रत पैदा हो सकती है।

## घर का माहौल

घर के माहौल का बच्चों पर बहुत असर पड़ता है। जैसा घर में होगा वैसा ही बच्चे करेंगे। उम्र के बढ़ने के साथ-साथ बच्चे बहुत सी नई-नई चीज़ें सीखते हैं। नई चीज़ें उन के लिए खुशी की बात होती हैं। लेकिन इस उम्र में बच्चों को अच्छे बुरे की पहचान नहीं होती। इसलिए अपने माँ-बाप, बहन-भाई को जो कुछ करते हुए देखते

हैं, बिना सोचे-समझे उसे करते हैं। इस तरह घर वालों की नक़ल करते हैं। एक्सपर्ट्स कहते हैं कि समाज नक़्काली है और सीखने के काम को नक़ल कहा जाता है। सीखने में गुलतियाँ करना, फिर उनको सही करना ही सीखने की वजह बनता है वरना तो सीखने का काम ही बंद हो जाए। एक्सपर्ट्स ने बच्चों की आदतों पर बड़ी गहरी स्टडी की है। सबसे ख़ास वजह माँ-बाप का सुलूक और घरेलू हालात को सामने रखा है। क्योंकि बचपन से ही बच्चे दूसरों की नक़ल करते-करते गुलत-सलत, उलटा-सीधा सब सीख लेते हैं। इसलिए घर में माहौल अच्छा हो ताकि बच्चों को बिना बताए आप सब कुछ सिखा दें। अपने घर में ऐसा माहौल बनाकर रखिए, जहाँ एक-दूसरे पर भरोसा हो और शौहर और बीवी के बीच बहतरीन माहौल हो, जहाँ एक दूसरे के साथ झूट-फ़रेब, मक्कारी न हो जिस से बच्चों पर गुलत असर न पड़े। बच्चों के अंदर पढ़ने का शौक पैदा कीजिए, खुद सारे काम टाइम पर कीजिए और टाइम-टेबिल की आदत डालिए। घर में पढ़ाई का माहौल बनाना अच्छी परवरिश के लिए बहुत ज़रूरी होता है।

## मेच्योर होने दें

बच्चों से बहुत ज़्यादा उम्मीदें बांधना सही नहीं है। उनसे उनकी उम्र और काम करने की सलाहियत के मुताबिक़ ही काम लेना चाहिए और उसी की उम्मीद भी रखनी चाहिए। वरना उम्र, ताक़त और सलाहियत से ज़्यादा काम का बोझ उन्हें झूठ बोलने



सच्ची कहानियां

# कपड़े वाला



पर मजबूर कर देगा। बच्चे की ज़ेहनी ग्रोथ के लिए बच्चे पर ध्यान देना ज़रूरी है। उसकी बातों को गौर से सुनें, उसके छोटे-छोटे मसले हल करें, साथ ही उसकी हॉबीज़ पर भी निगाह रखें। शुरु से ही लड़का हो या लड़की दोनों को ज़िम्मेदारियां देकर बड़ा किया जाए ताकि उसका हौसला बढ़ता जाए। बच्चे की सही और जायज़ स्वाहिशों को मानने, उसकी ज़रूरतों को पूरा करने और उसकी शिकायतों और बातों को ध्यान से सुनने, उसका हौसला बढ़ाने से आप उसके अंदर सेल्फ़ कांफ़िडेंस बढ़ा सकती हैं। सेल्फ़-कांफ़िडेंस बढ़ेगा तो पढ़ाई भी अच्छी होगी और उससे मार्कस भी अच्छे आएंगे।

## ज़िम्मेदारियां दें

बचपन से ही अपनी बच्ची को इस ज़िम्मेदारी के साथ बड़ा किया जाए कि उनके आस-पास के जितने भी मौके हैं सब उनके लिए हैं, तो यह एहसास उसके अंदर आगे बढ़ने की चाह पैदा करेगा। और वह खुद को परफेक्ट बनाने की कोशिश करेगी। उसे उम्र के मुताबिक ज़िम्मेदारियाँ देती जाएँ, इससे भी उसके अंदर सेल्फ़-कांफ़िडेंस बढ़ेगा क्योंकि जब वह अपना काम खुद पूरा करेगी तो उसे अच्छा लगेगा और उसे एक ज़िम्मेदार इंसान बनने में मदद मिलेगी। और यह बचपन से ही होता है। यह फैक्टर भी अच्छी पढ़ाई के लिए बहुत ज़रूरी है।

## सेल्फ़-स्टीम बढ़ाएं

दूसरी ज़रूरी चीज़ सेल्फ़-स्टीम है। आप उसके अच्छे काम की तारीफ़ करें, उसका हौसला बढ़ाएँ, उसको बेलेसिंग प्यार दें न ज़्यादा न कम, उसको लड़की होने की इज़्ज़त देंगी तो उसकी सेल्फ़ स्टीम खुद ब खुद बढ़ जाएगी। रिसर्चर्सों का ख्याल है कि जिनकी सेल्फ़-स्टीम हाई होती है, ऐसे बच्चे अपने कैरियर में दूसरों से बहतर होते हैं।

## सेहत

आप बच्चों की परवरिश करने के साथ-साथ यह कैसे भूल सकती हैं कि न्यूट्रीशन देना कितना ज़रूरी है। बिना अच्छा न्यूट्रीशन दिए हुए अच्छी पढ़ाई कैसे हो सकती है और कामयाबी तक कैसे पहुँचा जा सकता है?! ●

कपड़े की दुकान में काम करने वाले नौजवान नौकर को पता ही नहीं था कि उसके लिए क्या जाल बिछाया जा रहा है, वह नहीं जानता था कि यह खूबसूरत औरत जो कपड़े की ख़रीदारी के बहाने उसकी दुकान पर आती रहती है उसकी आशिक़ हो चुकी है और दिल दे बैठी है, उसके दिल में इश्क़, हवस और तमन्नाओं का तूफ़ान मौजें मार रहा है।

एक दिन वही औरत दुकान पर आई और अलग-अलग तरह के कपड़े दिखाने के लिए कहा। सबको पसंद करने के बाद उसने दुकानदार से कहा कि मैं इन कपड़ों को नहीं उठा सकती और पैसे भी साथ नहीं लाई हूँ। इसलिए यह कपड़े इस नौजवान के हाथ पहुँचा दीजिए और वहीं इसी के हाथ रुपये भी भेज दूंगी।

उस औरत ने सारा इन्तिज़ाम पहले ही से कर रखा था। घर ख़ाली था, सिर्फ़ कुछ राज़दार कनीज़ें घर में थीं। मुहम्मद बिन सीरीन जिसने जवानी की मंज़िलों में क़दम रखा था और खूबसूरत भी था, उसने कपड़ों को कंधे पर रखा और उस औरत के साथ चल पड़ा। जैसे ही वह घर में दाख़िल हुआ, पीछे से दरवाज़ा बंद हो गया। मुहम्मद बिन सीरीन को एक सजे हुए कमरे में लाया गया वह इस इन्तिज़ार में था कि वह औरत जल्दी से आ जाए और अपने कपड़े लेकर उसे उनकी क़ीमत दे दे ताकि वह वापस जा सके। इन्तिज़ार करते-करते देर हो गई और काफी देर के बाद पर्दा उठा और वह औरत भड़काऊ मेकअप में और सजधज कर आई और हज़ारों नाज़ व अदाओं के साथ कमरे में क़दम रखा। मुहम्मद बिन सीरीन फ़ौरन समझ गया कि एक ज़बरदस्त जाल उसी के लिए बिछाया गया है। उसने सोचा कि समझा-बुझाकर या मिन्नत-समाजत के ज़रिए उस औरत को टाल दे लेकिन वह सब बेकार लग रहा था। औरत ने इश्क़ की

दास्तान सुनाई और उससे कहा कि मैं तुम्हारे किसी कपड़े की ख़रीदार नहीं थी बल्कि मैं तो तुम्हारी ख़रीदार थी। मुहम्मद बिन सीरीन ने उसे नसीहत करने के लिए ज़बान खोली, ख़ुदा और क़यामत से डराया लेकिन उसके दिल पर कोई असर न हुआ, मिन्नत-समाजत की वह भी बेसूद रही। उस औरत ने कहा कि मेरी ख़्वाहिश पूरी करने के सिवा तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं है। और जब उसने देखा कि मुहम्मद बिन सीरीन अपनी बात पर अटल है तो उसे धमकी दी और कहा कि अगर मेरे इश्क़ को कुबूल नहीं किया और मेरी ख़्वाहिश पूरी न की तो अभी शोर मचा दूंगी कि यह नौजवान मेरे ऊपर हमला करना चाहता है। फिर पता है तुम्हारा अंजाम क्या होगा ?

मुहम्मद बिन सीरीन के रोंगटे खड़े हो गए। एक तरफ़ ईमान, अक़ीदा और तक्वा उसे हुक्म दे रहा था कि अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त करो और दूसरी तरफ़ औरत की ख़्वाहिश से इंकार जान, इज़्ज़त बल्कि हर चीज़ से बाज़ी लगाने के बराबर था। उसने देखा कि उस औरत की बात मान लेने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है लेकिन अचानक एक तरकीब उसके ज़ेहन में आ गई। उसने सोचा एक रास्ता अभी बाकी है। कोई ऐसा काम करना चाहिए जिससे उसकी मुहब्बत नफ़रत में बदल जाए और खुद ही मुझ से दूर हो जाए। अगर इस वक़्त खुद को गुनाह की गंदगी से बचाना है तो जाहिरी गंदगी को बर्दाश्त करना होगा। ट्वाएलेट के बहाने कमरे से बाहर निकला और ट्वाएलेट जाकर अपने जिस्म और कपड़ों पर वहां की गंदगी मल ली और जब उस हालत में कमरे में दाख़िल हुआ और औरत की निगाह उस पर पड़ी तो फ़ौरन अपना मूँह उस नौजवान की तरफ़ से मोड़ लिया और उसे घर से बाहर निकाल दिया। ●



# अली<sup>३०</sup> से मोहब्बत

■ शहीद मुर्तजा मुतहरी

## हज़रत अली<sup>३०</sup> की शहादत पर खास आर्टिकल

किसी ने अब तक इस राज़ को नहीं खोला है.. यानी मोहब्बत के राज़ों को खोलने का कोई फार्मूला या तरीका अब तक ईजाद नहीं हो सका है। महबूब में कोई ऐसी चीज़ होती है जो मोहब्बत करने वाले को बड़ी हसीन व खूबसूरत नज़र आती है, और वह उसकी तरफ़ खिंचता चला जाता है। यह खिंचाव व मोहब्बत, जब अपनी आखिरी मंज़िल पर होती है तो इसे इश्क़ कहते हैं। अली<sup>३०</sup> दिलों के महबूब और इंसानों के माशूक हैं... क्यों? और किस वजह से? अमीरुल मोमिनीन<sup>३०</sup> की ज़ात की हैरतअंगेज़ सिफ़तें, बुलंद किरदारी और बेमिसाल खुसूसियतें इंसान को इश्क़ पर उभारती और दिलों को दीवाना बना देती हैं। इश्क़े अली<sup>३०</sup> का यह असर आशिक़ को एक कभी न ख़त्म होने वाली ज़िंदगी दे देता है। जिसके दिल में आपकी मारेफ़त पैदा हो जाती है, फिर वह इंसान अपने को मुर्दा नहीं समझता बल्कि मरने के बाद भी उसे अपने ज़िंदा रहने का यकीन हो जाता है।

यह एक हकीक़त है कि अली<sup>३०</sup> की दोस्ती व मुहब्बत उनके ज़ाहिरी ज़िस्म से नहीं है। क्योंकि उनका पाक ज़िस्म अब हमारे बीच नहीं है और न हमें उसका एहसास या तसव्वुर ही है। अली<sup>३०</sup> की मुहब्बत इस किस्म की है जो किसी इंसान से उसके कारनामों की बुनियाद पर पैदा हो जाती है, और जो करीब-करीब हर मुल्क और हर क़ौम में पाई जाती है। जब हम अली<sup>३०</sup> से मुहब्बत की बात करते हैं तो यह मुहब्बत अज़्लाक़ और इंसानी फ़ज़ीलतों की बुनियाद पर होती है। अली<sup>३०</sup> इंसाने का मिल का एक अज़मी नमूना थे और यह एक

हकीक़त है कि इंसान, इन्सानियत के एक आला नमूने को पसंद करता है। और अगर अली<sup>३०</sup> इन सारी इंसानी फ़ज़ीलतों व खुसूसियतों वाले थे जिनमें इल्म, हिकमत, फ़िदाकारी, इन्केसारी, तवाज़ो, अदब, मेहरबानी, रहम व करम, हिल्म व अल्ताफ़, ग़ुरीबों से मोहब्बत, कमज़ोरों की मदद, अदल व इंसाफ़, आज़ादी, दूसरे इंसानों का एहतेराम, ईसार, बहादुरी, मुरव्वत, दुश्मनों से अच्छा सुलूक, सख़ावत वगैरा सभी कुछ आते हैं तो उनसे मुहब्बत और दोस्ती, हर इंसान करना चाहेगा लेकिन अगर अली<sup>३०</sup> में यह सब बातें तो होतीं और उनमें खुदा से इश्क़ का जज़बा न होता तो आज जितनी ज़्यादा उनसे मुहब्बत व इश्क़ है वह कभी भी नहीं हो सकता था।

अली<sup>३०</sup> की महबूबियत का राज़ यह है कि उनका अल्लाह से बड़ा गहरा रिश्ता था। अली<sup>३०</sup> को चूँकि हम अल्लाह का एक ख़ास बंदा समझते हैं, इसलिए हमारा इश्क़ उनसे और ज़्यादा बढ़ता जाता है। हकीक़त में अली<sup>३०</sup> से इश्क़ की वजह उनका खुदा से रिश्ता और क़ुरबत है जो उनकी फ़ितरत का हिस्सा है। और चूँकि यह फ़ितरत हमेशा बाकी रहने वाली है, इसलिए अली<sup>३०</sup> से मोहब्बत भी हमेशा बाकी रहने वाली है।

अली<sup>३०</sup> की ज़िंदगी के न जाने कितने चमकते हुए एंगिल हैं और उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए रौशन आपके ईमान और खुलूस की वजह से बताया गया है, और इसी चीज़ ने उनकी ज़ात में इलाही जज़बे की बुलन्द तरीन मंज़िल पैदा कर दी थी।

सौदा हमदानी एक बहुत बहादुर, निडर और अली<sup>३०</sup> की मुहब्बत में चूर औरत थीं। अमीरे शाम के दरबार में उन्होंने अमीरुल मोमिनीन<sup>३०</sup> की ज़बरदस्त तारीफ़ करते हुए उनके कमाल और नेक सिफ़तों के बारे में कहा था, “खुदा की रहमत और उसका दरूद नाज़िल हो अली<sup>३०</sup> पर जिन्हें ज़माने ने हमसे दूर कर दिया, लेकिन उनके साथ अदल व इंसाफ़ भी क़ब्र में दफ़न हो गया। उन्होंने अल्लाह से एक वादा कर रखा था और कभी भी उस वादे से मुंह नहीं मोड़ा, और आप हक़ और ईमान के साथ इस दुनिया से चले गए।”

सासा बिन सोहान अबदी, अमीरुल मोमिनीन<sup>३०</sup> के एक बहुत बड़े सहाबी और मुख़लिस व जानिसार आशिक़ थे। वह उन लोगों में से थे जिन्होंने अमीरुल मोमिनीन<sup>३०</sup> के





कफ़न-दफ़न में हिस्सा लिया था। जब इमाम को दफ़न कर दिया गया तो सासा ने अपना एक हाथ अपने दिल पर रखा और दूसरे हाथ से सर पर मिट्टी डालते हुए कहने लगे, “मौला! आपकी मौत भी एक शानदार मौत थी। आपकी विलादत की जगह भी पाक थी। आपका सब्र भी फ़तेह का एक निशान है और आपका जिहाद भी बुलन्द मंज़िलों वाला था। आपका दर्स हकीमाना, फ़िक्र पाकीज़ा, तिजारत फ़ायदे वाली और आख़िरत का सफ़र शानदार था।”

आप अपने ख़ालिफ़ की तरफ़ चले गए और उसने भी आपको खुश आमदीद कहा। उसके फ़रिश्ते आपको चारों तरफ़ से घेरे हुए हैं, पैग़म्बरे इस्लाम<sup>ﷺ</sup> के पड़ोस में आप जाकर बस गए, और अल्लाह ने आपको आपके भाई के आस-पास ही रखा। आप अपने भाई जनाबे मुहम्मद मुस्तफ़ा<sup>ﷺ</sup> के पास चले गए, उनकी मंज़िल में पहुंच गए और कौसर के लबालब जाम से सैराब हो गए।

“आपने इल्म व कमाल के वह दरवाज़े खोल दिए जो दूसरे न खोल सके, और मारेफ़त की उस मंज़िल तक पहुंचे, जहां दूसरे पहुंच ही नहीं सके। आपने अपने भाई और अल्लाह के रसूल<sup>ﷺ</sup> के साथ जिहाद किया और दीने खुदा के लिए अपने

आपको वक्फ़ कर दिया ताकि खुदा की शरीअत लागू हो जाए, बुराईयों को दूर किया, इस्लाम व ईमान को मज़बूत किया!

आप पर बेहतरीन दरूद व सलाम हो!

आपके ज़रिए मोमिन मज़बूत हो गए और उनके रास्ते रौशन हो गए। रसूल<sup>ﷺ</sup> की सुन्नत और दीनी एहक़ाम हमेशा-हमेशा के लिए ज़िंदा हो गए। पैग़म्बरे खुदा<sup>ﷺ</sup> ने जब भी आपको पुकारा हमेशा आपको अपनी ख़िदमत के लिए तैयार पाया। दूसरों के मुक़ाबले में पैग़म्बर<sup>ﷺ</sup> की निगाहों में आपका हमेशा एक ख़ास मुक़ाम रहा। आप रसूल की मदद व हिमायत में हमेशा आगे रहे और जान की बाज़ी लगाकर उनकी हिफ़ाज़त करते रहे। डर और ख़ौफ़ के मौकों पर निडर होकर अपनी तलवार से हमले किए और ज़ालिमों की कमर तोड़ कर रख दी, शिर्क, कुफ़्र, निफ़ाक़ व जिहालत की बुनियादे हिला दीं। भटके हुएों को जहन्नम की आग में झोंक दिया।

ऐ मोमिनो के सरदार! ज़िंदाबाद...

आप पैग़म्बरे इस्लाम<sup>ﷺ</sup> के सबसे करीबी लोगों में से थे। आप ही वह हैं जो सबसे पहले इस्लाम लाए। आप यकीन की आख़िरी मंज़िल पर थे, दिल खुदा की मारेफ़त से लबरेज़ था, पैग़म्बर<sup>ﷺ</sup> के सहाबियों में सबसे बढ़कर जानिसार और आपका नसीब सबसे अच्छा था।

खुदा की क़सम! आपकी ज़िंदगी ख़ैर व बरक़त की चाबी थी जो बेदीनी के सब रास्तों को बंद करने वाली थी। आपकी मौत ने हर तरह की बुराईयों का दरवाज़ा खोल दिया और हर अच्छा रास्ता बंद कर दिया। अगर लोगों ने आपकी हिदायत और रहनुमाई को कुबूल कर लिया होता तो आसमान और ज़मीन से अल्लाह की नेमतों की बारिश होती, लेकिन उन लोगों ने अपनी दुनिया के लिए आख़िरत को छोड़ दिया।

यह एक खुली हुई हकीक़त है कि लोगों ने दीन को अपनी दुनियादारी की वजह से छोड़ दिया क्योंकि वह अली<sup>ﷺ</sup> के अदल व इंसाफ़ और इस्लाम की राह में बेलचक़ रवैय्ये को बर्दाशत नहीं कर सके थे। और आख़िरकार दुश्मन का हाथ आगे बढ़ा और आपको ठीक सजदे की हालत में शहीद कर दिया।

इमाम अली<sup>ﷺ</sup> से दोस्ती व मुहब्बत का दावा करना जैसे अपने आपको भूल जाना है क्योंकि आपका रास्ता मुहब्बत में सर देने और दार पर चढ़ जाने की बेनज़ीर मिसालें हैं, जिन्हें हिस्ट्री ने अपने अंदर महफूज़ कर लिया है। यह राहे इस्लाम व राहे अली<sup>ﷺ</sup> में कुरबानियों की और जान देने की रौशन दास्तानें हैं जो हमारे लिए मशअले राह हैं। ●



سَلَامٌ عَلَى رُسُلِ الْوَسْطَيْنِ ... بِسْمِ اللَّهِ





# घरेलू खरीदारी

■ उज्जमा नक्वी

अच्छे घर के लिए घर वालों का भी अच्छा होना ज़रूरी है। यानी शादी के लिए बेहतरीन लाईफ-पार्टनर को चुनना चाहिए। क्योंकि अगर घर वाले मज़हबी होंगे तो घर भी मज़हबी होगा, अगर घर वाले बेदीन या बेनमाज़ी होंगे तो घर भी वैसा ही कहलाएगा।

कोई भी घर अपने आप न मज़हबी होता है और न ही नमाज़ी बल्कि जो घर वाले करते हैं उसी का असर घर पर भी पड़ता है। इस आर्टिकल में हम शादी के बाद की उन चीज़ों पर रोशनी डालने की कोशिश करेंगे जिनकी वजह से घर में मुश्किलें पैदा होती हैं, हालांकि कभी-कभी यह मुश्किलें दिखाई नहीं देती मगर उनका असर घर पर कहीं न कहीं पड़ता ज़रूर है।

इनमें से एक बहुत बड़ी मुश्किल जो यूरोपियन कल्चर से बहुत तेज़ी के साथ हमारे कल्चर में आ रही है बल्कि आ चुकी है वह यह है कि बीवी यह चाहती है कि शादी के बाद फ़ौरन ही उसकी अपनी नए मॉडल की गाड़ी हो, किसी अच्छे इलाके में आलीशान मकान हो और उसमें ज़िंदगी की सारी राहों और आसानियां हों। ज़ाहिर है कि आम तौर से एक मिडिल क्लास फैमिली के पास इतना पैसा नहीं होता कि शादी होते ही फ़ौरन इतना खर्च कर सके। नतीजे में सारा काम कर्ज़ और लोन पर होता है जिसके बाद क़िस्तों की मुसीबत पूरी ज़िंदगी सर पर सवार रहती है।

मगर यहां इस चीज़ पर भी ध्यान देना ज़रूरी है कि इन बातों का बिल्कुल यह मतलब नहीं है कि इन चीज़ों को या ज़िंदगी की ज़रूरी चीज़ों को न खरीदा जाए और न ही इस्लाम इन चीज़ों को लेने से रोकता है। खरीदारी के बारे में एक फ़ार्मूला ऐसा है जो छोटी से छोटी चीज़ से लेकर बड़ी से बड़ी चीज़ तक में काम आ सकता है:

## 1- ज़रूरत

पहली बात यह कि जो चीज़ खरीदी जाए उसकी वाकई ज़रूरत हो। अगर इंसान को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है और वह ले रहा है तो इसको इसराफ़ या फुजूलखर्ची कहते हैं और फुजूलखर्ची करने वाले के लिए कुरआन में है, “इसराफ़ करने वाले शैतानों के भाई-बंद हैं।”<sup>(1)</sup>

उलमा की नज़र में फुजूलखर्ची जायज़ नहीं है। जब ज़रूरत की बात आती है तो जिसको जो चीज़ लेने का दिल चाहता है उस चीज़ की ज़रूरत खुद बखुद समझ में आने लगती है। ज़रूरत का यह मतलब बिल्कुल नहीं है कि चार-छः महीने या साल-दो साल में कभी ज़रूरत पड़ जाए बल्कि ज़रूरत का यह मतलब है उस चीज़ के न होने से काम रुके या मुश्किल पेश आए या उस चीज़ के न होने से इंसान की समाज में वाकई इज़्ज़त कम हो रही हो।

हालांकि कुछ चीज़ें ऐसी होती हैं जिनकी इंसान को ज़िंदगी में एक दो बार ही ज़रूरत पड़ती है मगर वह उसकी ज़रूरत है जैसे ऐहराम या कफ़न जिनको इंसान पूरी ज़िंदगी अपने पास रखता है मगर ज़रूरत हज के वक़्त या मरने के बाद ही पड़ती है।

## 2- हैसियत

ज़रूरत के ऊपर जो दूसरी चीज़ रोक लगाती है वह इंसान की हैसियत है। हैसियत से ज़्यादा खर्च करना भी फुजूलखर्ची है। अब इन दो बातों को सामने

रखते हुए एक बेहतरीन लाइफ-पार्टनर की यह ज़िम्मेदारी है कि उसके शौहर की जो हैसियत है उसी में बेहतरीन ज़िंदगी गुज़ारने और बच्चों की अच्छी परवरिश करने की कोशिश करे।

कभी-कभी यह भी देखने में आता है कि कुछ औरतें अपने मौहल्ले, पड़ोस या रिश्तेदारों के पास किसी चीज़ को देखकर किसी नादान बच्चे की तरह अपने शौहर से फ़रमाईश कर बैठती हैं कि हमें भी चाहिए बल्कि इसे एक इशू बना लेती हैं और उस चीज़ के न होने में अपनी तौहीन समझती हैं। यह वह प्यास है जो कभी बुझ ही नहीं सकती है क्योंकि रोज़ एक नई चीज़ देखने में आएगी और ज़रूरी नहीं कि आपके शौहर की





# SALE

इतनी आमदनी हो कि जो भी आप को नज़र आए वह हाज़िर कर सके।

इसलिए ख़रीदारी की कसौटी यह नहीं होना चाहिए कि समाज में क्या है बल्कि अपनी हैसियत और ज़रूरत के मुताबिक़ सामान लेना चाहिए।

हज़रत फ़ातिमा ज़ेहरा<sup>र</sup> की सीरत इस सिलसिले में बेहतरीन नमूना बन सकती है कि आपने अपनी पूरी ज़िंदगी में अपने शौहर से कभी कोई फ़रमाइश नहीं की। वह जो अनार वाली रिवायत है उसको भी हम जनाबे फ़ातिमा<sup>र</sup> की फ़रमाइश नहीं समझ सकते। बल्कि हज़रत अली<sup>र</sup> ने खुद ही कहा था कि कुछ चाहिए तो नहीं। इसलिए यह जनाबे फ़ातिमा<sup>र</sup> की फ़रमाइश नहीं बल्कि हज़रत अली<sup>र</sup> की बात पर जनाबे फ़ातिमा<sup>र</sup> ने अनार लाने के लिए कहा था। वरना ज़िंदगी गुज़र जाती और यह ख़ातून एक बार भी किसी फ़रमाइश के लिए ज़बान न खोलती। क्योंकि आपकी निगाह में ज़िंदगी का मक़सद दुनिया के माल को जमा करना नहीं बल्कि आख़िरत के लिए खुद को तैयार करना और दूसरों की इस तैयारी में मदद करना है जैसा कि खुद इमाम अली<sup>र</sup> ने गवाही दी है कि 'मैंने अपनी बीवी को खुदा की इताअत में बेहतरीन मददगार पाया।'

हज़रत अली<sup>र</sup> का यह जुमला जनाबे फ़ातिमा<sup>र</sup> की सीरत के साथ-साथ हम को हमारी ज़िम्मेदारी का भी एहसास दिलाता है कि हमारी



बाज़ार की लिस्ट छोटी और परवरदिगार की इताअत की लिस्ट बड़ी होनी चाहिए।

खुदा की निगाह में यह मसला इतना अहम है कि जब खुदा ने कुछ रसूल<sup>र</sup> की कुछ बीवियों को बहुत ज़्यादा दुनिया की तरफ़ झुकते देखा तो सख़्त लहजे में डांट दिया, 'पैग़म्बर आप अपनी बीवियों से कह दीजिए कि अगर तुम लोग दुनिया की ज़िंदगी और उसकी ज़ीनत की तलबगार हो तो आओ मैं तुम्हें दुनिया का माल देकर ख़ूबसूरती के

साथ रुख़सत कर दूँ।'<sup>(2)</sup>

आख़िर में बस इतना ही कहना चाहूंगी कि घर का सबसे कीमती सामान जिसकी ज़रूरत सबसे ज़्यादा पड़ती है और सबसे अहम भी है वह घर का सुकून है। उसको पाने के लिए दूसरी चीज़ों को कुरबान किया जा सकता है न कि दूसरी चीज़ों के लिए उसको कुरबान कर दिया जाए। कहीं ऐसा न हो कि आप किसी सामान के लिए घर के सुकून कुरबान कर दें! अगर सुकून को कुरबान करके सामान लिया तो शायद उसके इस्तेमाल में भी आपको उतना मज़ा नहीं आएगा जितना कि आना चाहिए।

1- सूरए असरा/27, 2- सूरए अहज़ाब/28 ●





# एक आयत

**आमतौर** पर सब के ज़ेहन में एक सवाल यह पैदा होता है कि रोज़े से हमें कौन सा मक़सद हासिल करना है? इस सवाल के जवाब के लिए कुरआन ने इस आयत के आखिरी हिस्से में रोज़े की हिकमत को बयान किया है :-

**“ताकि शायद तुम इसी तरह मुत्तकी बन जाओ।”**

इस तरह एक ही आयत में कुरआन ने तीन बातों को बयान किया है :-

**पहली:** रोज़े का हुक्म कि रोज़ा तुम पर वाजिब है।

**दूसरी:** पिछली उम्मतों का ज़िक्र कि रोज़ा उन पर भी वाजिब था ताकि जिन लोगों को रोज़ा रखना मुश्किल लगे वह इसे साईकॉलॉजिकली आसान समझें।

**तीसरी बात:** रोज़े की हिकमत और फ़लस्फ़े को बताया है ताकि इन्सान रोज़े को सिर्फ़ बाहर से न देखे बल्कि वह इसकी हकीकत और इसकी गहराई तक पहुँच सके यानी रोज़े की हकीकत को समझ के इसके मक़सद को पा सके।

रोज़ा इन्सान की रूह और

बदन की कामियाबी के लिये है इसीलिए इस आयत का अंदाज़ भी बहुत प्यार भरा है। जिस तरह एक माँ अगर अपने मरीज़ बच्चे को कोई ऐसी कड़वी दवा पिलाना चाहे जिसके बिना उसका इलाज न हो सकता हो तो वह पहले अपने बच्चे को प्यार से बुलाती है, फिर उसे बड़ी नर्मी से दवा पीने को कहती है, दूसरे बच्चों का मिसाल देती है, फिर दवा पीने के फ़ायदे बताती है कि अगर इस दवा को पी लोगे तो बिल्कुल ठीक हो जाओगे।

इस आयत में अल्लाह ने फ़रमाया कि “ऐ ईमान वालो” यानी पहले प्यार भरे लहजे में पुकारा, उसके बाद नर्मी और मुहब्बत के साथ अपना हुक्म सुनाया कि तुम पर रोज़ा वाजिब कर दिया गया है। इसके बाद दूसरी उम्मतों की मिसाल दी और आखिर में इसका फ़ायदा और हिकमत को बयान किया कि शायद तुम परहेज़गार बन जाओ।

और यह अन्दाज़ इसलिए अपनाया ताकि इन्सान पहले तो इस अमल में किसी कठिनाई का एहसास न करे और उसके बाद इसके फ़ायदे और हिकमत को समझकर इसी कठिन और सख़्त रोज़े में उसे मज़ा आने लगे।

## तक्वा

रोज़े का एक और बहुत ख़ास फ़ायदा “तक्वा” है बल्कि अगर यूँ कहा जाये कि रोज़े का असल मक़सद यही “तक्वा” है तो भी ग़लत न होगा। शायद इसीलिए कुरआन ने जब रोज़े का मक़सद बयान किया तो यही कहा, “... शायद तुम मुत्तकी बन जाओ।”

मुस्लिम समाज पर ईसाई, यहूदी और दूसरे कल्चर्स का असर यह हुआ कि “तक्वा” को बिल्कुल बेजान बना दिया गया और इसकी रूह निकाल दी गई। इसी तरह हर उस आदमी को “मुत्तकी” या परहेज़गार कहा जाने लगा जो सारी दुनिया से बेख़बर, समाज से अलग-थलग,

इन्सानों से दूर और दोस्त-दुश्मन, अपने पराये सबसे लापरवाह होकर एक सीधे-सादे आदमी की तरह बस खुदा की इबादत करता रहे। जबकि यह तक्वा उस तक्वे से बिल्कुल अलग बल्कि उल्टा है जो रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup>, अमीरुल मोमिनीन<sup>ؑ</sup> और दूसरे इमामों के पास था और उन्हें हमें बताया है। इस्लाम में तक्वा समाज को छोड़कर मस्जिद में बैठ जाने का नाम नहीं है बल्कि तक्वा का मतलब



ज़िन्दगी के हर हिस्से में हर घड़ी कुछ न कुछ करते रहने की ललक, आगे बढ़ने की ललक, तरक्की की ललक, इबादत की ललक, अच्छे कामों की ललक, दूसरों की मदद करने और उनकी मुश्किलों को दूर करने की ललक सब ही कुछ आता है, न कि सब कुछ छोड़-छाड़ कर बस मुसल्ले पर बैठ जाना। तक्वा यानी लागों के बिल्कुल बीचों बीच रहकर खुदा की इताअत करना और गुनाहों से बचना।

## हदीस

**“रोज़ेदार को दो मौकों पर खुशी का एहसास होता है, एक इफ़्तार के वक़्त और दूसरे अपने परवरदिगार से मुलाक़ात के वक़्त।”**

इफ़्तार के वक़्त इसलिए क्योंकि खुदा ने उसे तौफीक दी और रोज़ा पूरा हो गया, मरीज़ नहीं हुआ, कोई सफ़र नहीं करना पड़ा, शैतान ने नहीं



बहकाया और खुदा ने उसे किसी और काम में नहीं लगाया क्योंकि खुदा हर एक को अपनी बारगाह में आने की इजाज़त नहीं देता, वह जिन्हें अपनी बारगाह के लायक नहीं समझता उन्हें दूसरे कामों में लगा देता है, कभी परेशानियों और मुसीबतों में उलझा देता है तो कभी हद से ज्यादा नेमतें देकर उन्हीं में मसरूफ कर देता है।

इसी तरह खुदा से मुलाकात के वक़्त खुशी इसलिए होती है क्योंकि यही हमारे लिए सबसे बड़ी नेमत है।

रोज़ेदार कभी कुरआन पढ़ता है कि खुदा उससे बात करे, कभी दुआ करता है ताकि वह खुदा से बात करे लेकिन कभी वह कुछ भी नहीं करता और जुबान भी खामोश रहती है, फिर भी खुदा से बात कर रहा होता है क्योंकि खुदा से बातें करने के लिए जुबान और आवाज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती।

अगर इन्सान इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि कुरआन खुदा का कलाम है और जब वह कुरआन पढ़ता है तो खुदा उससे बातें कर रहा होता है तो फिर वह कुरआन को सिर्फ़ सवाब के लिये नहीं पढ़ेगा बल्कि कुरआनी आयतों को अपनी ज़िन्दगी में ढालने की कोशिश करेगा।

इसी तरह अगर इन्सान इस बात को भी समझ ले कि दुआ करते वक़्त वह खुदा से बातें कर रहा होता है और खुदा बहुत करीब से उसकी दुआओं को सुनता है तो फिर वह खुदा की बारगाह में छोटी-छोटी और मामूली चीज़ें नहीं मांगेगा बल्कि वह चीज़ें मांगेगा जो उसके इतने ऊंचे मुक़ाम से मेल खाती होंगी और ऐसा भी हो सकता है कि वह कुछ मांगने के बजाए सिर्फ़ अपने परवरदिगार से बातें करने के लिए ही दुआ कर रहा हो, अगर कुछ मांग रहा हो तो खुदा से खुदा को ही मांग रहा हो क्योंकि अगर इन्सान को खुदा मिल जाये तो कुछ न होते हुए भी सब कुछ मिल जायेगा और अगर खुदा न मिला तो सब कुछ होते हुए भी कुछ नहीं मिलेगा। ●

## इसे भी पढ़िए



- 1- इफ़तार में ठंडी चीज़ों जैसे सॉफ़्ट ड्रिंक्स, शरबत, कोल्ड वाटर वगैरा से ख़ास कर बचें। अगर बहुत ज़्यादा प्यास लगी हो तो गुनगुना पानी ज़्यादा अच्छा है। हदीसों में भी ठंडी चीज़ों से सख़्ती से रोका गया है।
- 2- इफ़तार की शुरुआत ख़ुर्मा, शहद या गुनगुने पानी वगैरा से करें।
- 3- सब्ज़ी इफ़तार में तो फ़ायदेमन्द है लेकिन सहरी में खाने से कभी-कभी रोज़े में प्यास लगती है।
- 4- इफ़तार और सहरी के बीच में अपनी ज़रूरत के एतेबार से आप जितना ज़्यादा पानी पी सकती हैं पीजिए।
- 5- रोज़े के दिनों में सिर्फ़ दो वक़्त खाना चाहिए। जिसके लिए इफ़तार और रात का खाना एक साथ खाना होगा।
- 6- इफ़तार में ज़्यादा भारी ग़िज़ाएं नहीं खाना चाहिए क्योंकि इसकी वजह से सहरी तक आपका मेदा ख़ाली नहीं हो पाएगा।
- 7- इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि सहरी में थोड़ा पहले उठ जाएं ताकि जल्दी-जल्दी के बजाए आराम से जो कुछ खाना है वह खा सकें।
- 8- इफ़तार और ख़ास कर सहरी में फल ज़रूर खाइए। फलों में क्योंकि पोटेशियम ज़्यादा होता है इसलिए ये जिस्म में ताक़त के लिए बहुत फ़ायदेमन्द होते हैं। साथ ही फल खाने से प्यास भी कम लगती है।
- 9- दिन भर के ख़ाली पेट में इतनी ताक़त नहीं होती कि वह भारी चीज़ों को बर्दाश्त कर सके। इसलिए इफ़तार में जल्दी हज़म होने वाली चीज़ें खाइए।
- 10- माहे रमज़ान में सलाद आपके खाने में जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनको अच्छी तरह पूरा कर देती है, इसलिए सलाद ज़रूर खाइए।
- 11- बैंगन, मिर्च और दूसरे मसाले रोज़े में आपकी प्यास को बढ़ा देंगे।
- 12- सॉफ़्ट ड्रिंक्स से माहे रमज़ान में ज़रा ज़्यादा बचिए क्योंकि इन से एसिडिटी और गैस्ट्रिक प्रॉब्लम हो सकती है।
- 13- इफ़तार में एक ग्लास दूध या इतना ही दही बहुत फ़ायदेमन्द हैं।
- 14- माहे रमज़ान में दूसरे दिनों के मुक़ाबले में अपने दांतों का ज़रा ज़्यादा ख़याल रखिए, इफ़तार और सहरी के बाद ब्रश ज़रूर कीजिए। ●



15 माहे  
रमज़ान

# इमाम अ० हसन

■ बाकिर जैदी

इमाम हसन<sup>र०</sup> की सुलह पर एक लम्बे दौर से बहेस हो रही है और इमाम हसन<sup>र०</sup> की सुलेह पर उस वक्त से ज़्यादा सवाल उठाए जा रहे हैं जब से आपके छोटे भाई इमाम हुसैन<sup>र०</sup> की यज़ीद जैसे ज़ालिम हाकिम के खिलाफ़ जंग और फिर शहादत सामने आई। इसलिए कुछ नासमझ लोग इस बात से यह अंदाज़ा लगा बैठते हैं कि इमाम हसन<sup>र०</sup> ज़ाती तौर पर नर्म मिज़ाज वाले थे और जंग को पसंद नहीं करते थे। इसीलिए आपने मुकाबले के बजाए सुलेह कर ली थी। जबकि इमाम हुसैन<sup>र०</sup> ज़ाती तौर पर बहादुर और जंगजू थे इसलिए आपने यज़ीद का मुकाबला किया और उसकी बैअत नहीं की। यहां तक कि खुद और अपने ख़ानदान के लोगों को शहीद होने दिया लेकिन सुलेह और कम्प्रोमाइज़ नहीं किया। सवाल यह है कि क्या हकीकत भी यही है या कुछ और है???

इस नाजुक मसले को समझने के लिए हमें इमामों को खुदा की तरफ़ से दी गई ज़िम्मेदारियों को पहचानने की ज़रूरत है और फिर हम यह देखेंगे कि क्या इमाम<sup>र०</sup> ने अपने किरदार के ज़रिए इस ज़िम्मेदारी को पूरा किया या नहीं???

खुदा की तरफ़ से इमामों को यह ज़िम्मेदारी दी जाती है कि वह दीन को इंसानों के बीच फैलाएं और उसका डिफेंस करें, दीन की तबलीग़ करें और इंसानियत की हर मैदान में रहबरी करें। और जब कभी भी ऐसे हालात पैदा हों कि दीन ख़तरे में

हो तो दीन को बचाने के लिए सबसे अच्छे रास्ते को चुनें। जैसा कि रसूले इस्लाम<sup>र०</sup> ने अपनी ज़िंदगी में दीन को फैलाया था और अलग-अलग तरह से दीन की हिफ़ाज़त की थी। क्या रसूल<sup>र०</sup> का दीन को बचाने का तरीका हमेशा जंग और तलवार ही रहा...?? नहीं! ऐसा बिल्कुल नहीं था! बल्कि हमें रसूले अकरम<sup>र०</sup> की सीरत में साफ़ तौर पर यह चीज़ नज़र आती है कि आपने जहां दीन के दुश्मनों से जंग की वहां आपने मदीने के आस-पास रहने वाले कबीलों से एग्रीमेंट और कम्प्रोमाइज़ भी किए। यहां तक कि आपने अपने सबसे बड़े दुश्मन यानी मक्के के मुशिरकों से हुदैबिया में सुलेह भी की जो तारीख़ में सुलेह हुदैबिया के नाम से जानी जाती है। और इस सुलेह का जितना फ़ायदा इस्लाम और मुसलमानों को हुआ उतना फ़ायदा उस वक्त जंग से नहीं मिल सकता था। इसीलिए आपने जंग के बजाए सुलेह का रास्ता चुना और इसका असर यह हुआ कि आने वाले दिनों में मक्के पर इस्लाम का परचम लहराने लगा।

इसलिए यह बात साफ़ हो जाती है कि जंग, शहादत व सुलेह इस्लाम में हालात और शर्तों को देखने के बाद चुनी जाती हैं और जो चीज़ भी दीने इलाही के लिए ज़रूरी हो उसे चुन लिया जाता है। यहां पर एक ख़ास प्वाइंट यह है कि इमाम हुसैन<sup>र०</sup> जिन्हें बहादुरी और शहादत का नमूना कहा जाता है वह 10 साल (50 से 60 हिजरी) तक अमीरे शाम के दौर में इमाम रहे लेकिन आपने अमीरे शाम के साथ कोई जंग नहीं की। जिसका मतलब यह है कि आप उन हालात में जंग को सही नहीं समझते थे लेकिन यज़ीद के आते ही आपने जंग का एलान कर दिया और खुदा की तरफ़ से दी गई एक अहम ज़िम्मेदारी यानी दीने इस्लाम की हिफ़ाज़त को पूरा किया। जिसे इमाम हुसैन<sup>र०</sup> ने आशूरा के दिन यूँ बयान





# यादगिर

السلام عليكم يا باقر الحسین



फरमाया है, “मौत ज़िल्लत से बेहतर है और (सुलेह के नतीजे में) ज़िल्लत जहन्नम में जाने से बेहतर है।” और बात बिल्कुल साफ़ है कि जहन्नम में इंसान ज़िम्मेदारी पूरी न करने पर ही जाता है। इस तरह पता चलता है कि दीन की हिफाज़त करना एक ज़िम्मेदारी है। अब यह ज़िम्मेदारी कभी जान देकर और जंग करके पूरी की जाती है और कभी जान बचाकर सुलेह के ज़रिए। और यही वह चीज़ है जो हमें इमाम हसन<sup>अ</sup> की ज़िंदगी में दिखाई पड़ती है। आईए उन हालात और शर्तों पर रौशनी डालते हैं जिन हालात में इमाम<sup>अ</sup> ने सुलेह की थी।

इमाम हसन<sup>अ</sup> को जब इमाम अली<sup>अ</sup> की शहादत के बाद इमामत की ज़िम्मेदारी मिली तो कूफ़े में 40 हजार लोगों ने आपके हाथ पर बैअत की थी। लेकिन उन लोगों के जेहनों में कुछ डर भी बैठे हुए थे और वह यह कि कहीं यह जंग खानदानी और विरासत वाली न हो। बहेरहाल इमाम हसन<sup>अ</sup> की बैअत के वक़्त अगर कूफ़े में बसने वाले लोगों को देखें तो उन्हें चार ग्रुप में बांटा जा सकता है:

**1- उमवी पार्टी-** वह लोग जो अमीरे शाम की बहुत ज़्यादा सपोर्ट करते थे और उनके लिए जासूसी करते थे।

**2- ख़्वारिज-** जिन्होंने बैअत करते वक़्त इमाम हसन<sup>अ</sup> के सामने अमीरे शाम से जंग करने की शर्त रखी लेकिन इमाम<sup>अ</sup> ने जब इसे कुबूल नहीं किया तो इमाम हुसैन<sup>अ</sup> के पास चले आए और उनके हाथ पर बैअत करना चाही जिसे इमाम हुसैन<sup>अ</sup> ने टुकरा दिया।

**3- शक में धिरे लोग-** जो अभी तक हक़ और बातिल को नहीं समझ पाए थे। यह लोग न

इमाम हसन<sup>अ</sup> को हक़ की निगाह से देखते थे और न ही अमीरे शाम के गुलत होने को मानते थे।

**4-किराये के फ़ौजी-** जो दुनियावी माल-दौलत के लिए जंग करते थे और जहां मौका देखते उसका हाथ थाम लेते थे।

ऐसे लोगों के साथ लश्कर बनाकर जंग करना जिसका ऐलान इमाम अली<sup>अ</sup> कर चुके थे, आसान काम नहीं था। इन हालात में इमाम हसन<sup>अ</sup> के लिए अपनी हुकूमत को मज़बूत करने, दीन की हिफाज़त करने और दुश्मन से मुकाबले के लिए चार रास्ते थे।

**पहला रास्ता-** अगर आप पब्लिक और कबीलों के सरदारों से अपनी हिमायत के लिए कहते और उन्हें अमीरे शाम की तरह माल-दौलत देते, पोस्ट और गर्वनरी का आफ़र देते तो फिर यह लोग आपका साथ देने पर तैयार हो जाते। इस काम का मश्वेरा कुछ लोगों ने इमाम<sup>अ</sup> को दिया भी था लेकिन आपने यह कहकर ऐसा करने से मना कर दिया था कि क्या तुम चाहते हो कि मैं जुल्म के ज़रिए फ़तेह हासिल करूं। खुदा की क़सम! यह नहीं हो सकता।

**दूसरा रास्ता-** शुरू ही से इमाम हसन<sup>अ</sup> अमीरे शाम के साथ सुलेह कर लें क्योंकि लोग अमीरे शाम की लीडरशिप से जुड़े रहने में अपने फ़ायदे पूरे होते देख रहे थे। लेकिन इस रास्ते को भी इमाम<sup>अ</sup> ने कुबूल नहीं किया क्योंकि इस तरह आपका किरदार जुल्म के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद न करने के बराबर था और वह ऐतराज़ जो किया जाता है कि आप नर्म मिज़ाज वाले और जंग से बचने वाले थे, सही साबित हो जाता।

**तीसरा रास्ता-** आप<sup>अ</sup> आख़िरी दम तक जिहाद करते, यहां तक कि शहीद हो जाते यानी एक ऐसी जंग लड़ते जिसका कोई फ़ाएदा न होता।

जबकि आपकी जंग के बारे में अभी लोगों के जेहनों में शक बाक़ी थे कि क्या यह जंग, हुकूमत और विरासत वाली जंग तो नहीं है या हकीकत में उसूलों की जंग है जैसे अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने जंग की जिसके बारे में तारीख़ ने फैसला किया कि वह हुकूमत हासिल करने की जंग थी।

**चौथा रास्ता-** चौथा रास्ता यह था कि इमाम<sup>अ</sup> लश्कर लेकर निकलें, दुश्मन से जंग करें और दीन को बचाएं। इसलिए आपने लश्कर को तैयार किया और लश्कर के तीन सरदारों को लश्कर की कमांड सौंपी जो इस तरह थे:

(1) उबैदुल्लाह इब्ने अब्बास (2) कैस बिन साद (3) साद बिन कैस। जिस वक़्त लश्कर मदाएन के पास पहुंचा तो अमीरे शाम ने धोखे से उबैदुल्लाह को मुलाकात के लिए बुलाया और फिर इमाम के लश्कर में मौजूद अपने जासूसों के ज़रिए ऐलान करवा दिया कि उबैदुल्लाह अमीरे शाम से मिल गए हैं। बहेरहाल लश्कर जो पहले ही कई सोचों वाले लोगों से मिलकर बना था, इस ख़बर पर बेचैनी का शिकार हो गया। उधर इमाम<sup>अ</sup> लश्कर के जाने के बाद कूफ़े से निकले थे ताकि लश्कर की हकीकत खुल जाए। बहेरहाल इमाम<sup>अ</sup> जब मदाएन पहुंचे तो आपके कुछ फ़ौजी सरदार बिक चुके थे और आपके लश्कर वालों ने यह फैसला कर लिया था कि आपको गिरफ़्तार करके अमीरे शाम को दे दिया जाए ताकि जंग की वजह की ख़त्म हो जाए।

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ इमाम हसन<sup>अ</sup>





पर मदाएन में कातिलाना हमला भी हुआ था। जिसमें आप<sup>ॐ</sup> ज़ख्मी हो गए और आप<sup>ॐ</sup> को गिरफ्तार करके अमीरे शाम के सामने पेश किए जाने का प्लान बनाया जाने लगा। इन खतरनाक हालात में अमीरे शाम की तरफ से एक पैगाम आया कि मैं सुलेह करने के लिए तैयार हूँ और जो शर्तें भी आप कहेंगे, मुझे कुबूल हैं। जहाँ एक तरफ कुछ लोगों को इमाम<sup>ॐ</sup> की इमामत पर शक था जैसे जंग को दीन के लिए नहीं हुकूमत के लिए जंग माना जा रहा था, इन हालात में अमीरे शाम का असली मकसद लोगों पर खुल नहीं पाया था। इमाम<sup>ॐ</sup> ने इन हालात में अपने थोड़े से सच्चे सहाबियों को बचाने के लिए और हकीकत का चेहरा सामने लाने के लिए सुलेह कर ली और इस सुलेह की शर्तों के जरिए अमीरे शाम के ग़लत होने को साबित कर दिया।

इस सुलेह के बाद अमीरे शाम ने कूफे पहुंच कर मिम्बर पर बैठ कर ऐलान किया कि मैंने तुमसे इसलिए जंग नहीं की है कि तुम नमाज़ पढ़ते हो, रोज़े रखते हो, ज़कात देते हो, मेरी जंग दीन के लिए नहीं थी। मैं तो हुकूमत हासिल करना चाहता था जो मुझे मिल गई। मैं अब तुम्हारा अमीर और बादशाह हूँ। और फिर जो जुल्म अली<sup>ॐ</sup> के शिष्यों पर ढाए गए वह किसी से छुपे हुए नहीं हैं।

इमाम हसन<sup>ॐ</sup> ने सुलेह नामे में पांच शर्तें लिखी थीं:

1- हुकूमत अमीरे शाम को दी जाती है शर्त यह है कि वह खुदा की किताब, रसूल<sup>ॐ</sup> की सुन्नत और नेक खलीफ़ाओं की सीरत पर अमल करेंगे।

2- अगर अमीरे शाम मर गए तो हुकूमत ज़िंदा होने की सूरत में हसन को वरना हुसैन<sup>ॐ</sup> को मिलेगी। अमीरे शाम को अपना जानंशीन तय करने की इजाज़त नहीं है।

3- अमीरुल मोमिनीन अली<sup>ॐ</sup> को बुरा-भला कहने पर रोक लगाई जाएगी और हज़रत अली<sup>ॐ</sup> का नाम नेकी के साथ लिया जाएगा।

4- कूफे के बैतुलमाल में जो पांच लाख दिरहम हैं वह मुआविया को नहीं मिलेंगे। मुआविया दो लाख दिरहम हर साल हसन<sup>ॐ</sup> को देंगे और बनी हाशिम को बनी अब्दु शम्स पर बरतरी दी जाएगी। और दारा अबजर के

ख़िराज में से एक मिलयन दिरहम उन मुसलमानों की औलाद में तक़सीम किया जाएगा जो जंगे जमल और सिफ़्फ़ीन में अमीरुल मोमिनीन के साथ जंग करते हुए शहीद हुए थे।

5- लोगों को आज के बाद अमन व अमान के साथ रहने दिया जाएगा। किसी को भी चाहे वह ईराकी हो या शामी, हिजाज़ी हो या यमनी, किसी की तरफ़दारी या दोस्ती करने के जुर्म में गिरफ्तार नहीं किया जाएगा।

इन शर्तों में इमाम<sup>ॐ</sup> ने अमीरे शाम के बातिल और ग़लत होने को साबित कर दिया। यह शर्त लिख कर कि वह कुरआन व सुन्नत पर अमल करेंगे, इमाम<sup>ॐ</sup> ने लोगों पर साफ़ कर दिया कि वह कुरआन व सुन्नत के पाबंद नहीं हैं। और इसी तरह अमीरे शाम ने 40 से 50 हिजरी का ज़माना जो इमाम हसन<sup>ॐ</sup> की ज़िंदगी में गुज़ारा, उससे धीरे-धीरे लोगों को मालूम हो गया कि यह जंग इमाम हसन<sup>ॐ</sup> की तरफ़ से दीने इलाही की हिमायत में जंग थी और दुश्मन की तरफ़ से इक़तेदार और दीन को तबाह करने की साज़िश थी। इसी वजह से अमीरे शाम ने इमाम<sup>ॐ</sup> को भी ज़हर दिलवाकर शहीद करवा दिया और अपनी मौत से पहले यज़ीद जैसे फ़ासिक व फ़ाजिर इंसान को खलीफ़ा बना दिया। इमाम ने इस सुलेह के जरिए अपने सच्चे शिष्यों के खून को बाद के लिए महफूज़ कर लिया और दीने इलाही की हिफ़ाज़त की।

आख़िर में यह कि हमेशा क़त्ल और शहादत के जरिए ही दीन को नहीं बचाया जाता बल्कि कभी हालात और शर्तों के मुताबिक़ जान को बचाके भी दीन को बचाया जाता है। जैसा कि इमाम हसन<sup>ॐ</sup> ने किया वरना इमाम के लिए शहीद हो जाना कुछ नासमझ और कमज़र्फ़ लोगों की बुरी-भली बातें सुनने से ज़्यादा आसान था। जैसा कि एक शख्स ने आप<sup>ॐ</sup> से कहा था कि ऐ मोमिनो को ज़लील करने वाले! सुलेह क्यों की? जिसपर आप<sup>ॐ</sup> ने कहा कि तुम लोगों को बचाने के लिए यह काम किया है।

बहैरहाल इमाम<sup>ॐ</sup> ने खुदा की तरफ़ से दी गई अपनी ज़िम्मेदारी को अच्छे तरीक़े से पूरा किया जिसकी वजह से आपको ज़हरीले अल्फ़ाज़ के तीर सहना पड़े। ●



## सूरउ फ़ातिहा

**प्रो. सै. कमर अब्बास** M.A. (Pol. Sc., Eco., Eng.) सिंगरौली, उन्नाव में 02-02-1944 को पैदा हुए और लखनऊ यूनिवर्सिटी से तीन सब्जेक्ट्स में एम.ए. करने के बाद S.C.E.R.T. में प्रोफ़ेसर होकर रिटायर हुए। मरहूम नमाज़ के पाबंद, बहुत नेक और एक हमदर्द इंसान थे। लेकिन कुछ बदमाशों ने उनके घर को 14-11-2010 को लूटा और फिर उन्हें बहुत बेदर्दी से क़त्ल कर दिया। मरहूम मुहिब्बे अहलेबैत थे। उम्मीद है कि अल्लाह उनको शहीद का दर्जा देगा।

**मरहूम की एहलिया अफ़शां रिज़वी ने 'मरयम' के लिए तआवुन किया है। खुदा उन्हें इसका अज़्र अता करे!**

**इन मरहूमों के लिए भी सूरउ फ़ातिहा की गुज़ारिश है:**

मरहूम सै. अब्बास अली  
मरहूमा अनवरी बेगम  
मरहूम सै. राहत हुसैन  
मरहूम सै. तवक्कुल हुसैन  
मरहूमा कनीज़ सुगरा  
मरहूम सै. वसीउल हसन  
मरहूमा कनीज़ फ़ातिमा





# **GULSHAN**

## **MEHANDI & HERBALS**

***IRFAN ALI PRADHAN***

*403 & 404, A Block*

*REGALIA HEIGHTS*

*Ahmadabad Palace Road*

*KOHE-FIZA*

*BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.*

*+919893030792, +917554220261*


***MOHTARMA "GULSHAN"***

*G-1, Krishna Apartment*

*Plot No. 2, Firdaus Nagar*

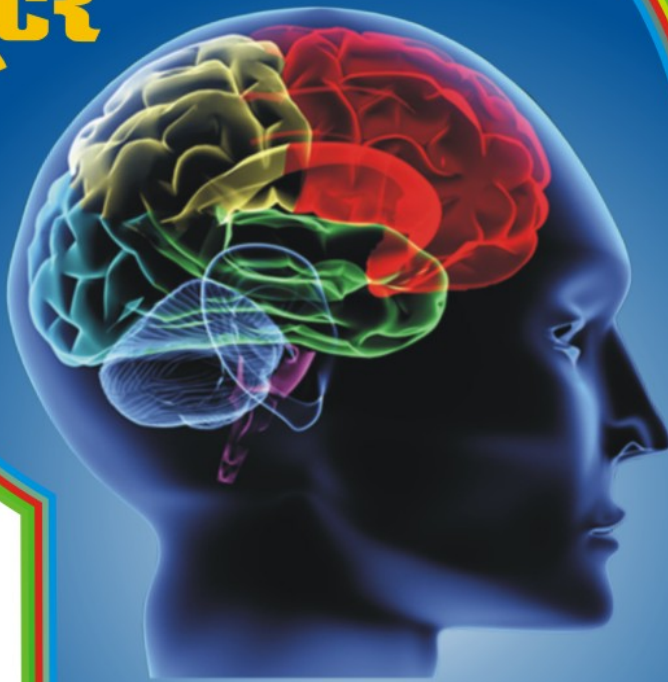
*Bairasia Road, BHOPAL*

*+91-755-2739111*





# दिमाग का बनेगा कम्प्यूटर मॉडल



साइंटिस्ट

दिमाग का कम्प्यूटर मॉडल बनाने की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। उन्होंने एक ऐसी तकनीक तैयार कर ली है, जिससे दिमाग की सेल्स के आपसी कनेक्शनों और कामों को समझना मुमकिन हो गया है। साइंस

में रिसर्च का एक नया मैदान उभर रहा है, इसे 'कनेक्टोमिक्स' कहते हैं। कनेक्टोमिक्स के ज़रिये ब्रेन की सेल्स के कनेक्शनों या सिनॉप्सिस का नक्शा तैयार किया जाता है। इन कनेक्शनों की मैपिंग के ज़रिए यह जानने की कोशिश की जाती है कि ब्रेन के सर्किट में इंफार्मेशन का बहाव किस तरह से होता है। यह नक्शा साइंटिस्टों को यह बता सकेगा कि ब्रेन के अंदर एहसास, हलचल और ख्यालात किस तरह पैदा होते हैं और एल्जाइमर, सिजोफ्रीनिया और स्ट्रोक जैसी बीमारियों में इन सेल्स के कामों में कैसी गड़बड़ी पैदा हो जाती है।

ब्रेन के कनेक्शनों की नापजोख करना आसान काम नहीं है। ब्रेन में करीब 100 अरब सेल्स होती हैं। इन्हें हम न्यूरोन भी कहते हैं। हर एक न्यूरोन हजारों दूसरी सेल्स के साथ जुड़ा होता है।

ये कनेक्शन 'सिनॉप्सिस' कहलाते हैं। इन कनेक्शनों की तादाद खरबों में होती है। यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन के साइंटिस्ट टॉम-मुसिक-फ्लोगेल के सुपरवीज़न में रिसर्चरों की टीम इन कनेक्शनों की पेचीदगियों को सुलझाने की कोशिश कर रही है।

## बुनियादी ढांचा

ब्रेन का न्यूरो सर्किट किस तरह काम करता है, यह जानने के लिए सबसे पहले हमें यह मालूम होना चाहिए कि हर एक न्यूरोन का अपना खास काम क्या है और वह ब्रेन की किन-किन सेल्स से जुड़ा हुआ है। अगर हम कुछ खास फंक्शन वाले न्यूरोन के बीच कनेक्शनों का नक्शा तैयार करने का कोई तरीका खोज लें तो हम एक दिन इसकी बुनियाद पर ब्रेन का कम्प्यूटर मॉडल तैयार कर सकेंगे। इस मॉडल के सहारे यह समझना आसान हो जाएगा कि ब्रेन का पेचीदा न्यूरो नेटवर्क किस तरह ख्यालों और एहसासात को

अमेरिकी साइंटिस्टों के ज़रिए ह्यूमेन ब्रेन का पहला तफ़्सीली जीन मैप तैयार किया गया है, जिससे पता चला है कि दो ह्यूमेन ब्रेन के जीन्स के नक्शों में 94% समानता होती है। जीन नक्शे तैयार करने के पीछे ख़ास मक़सद ह्यूमेन ब्रेन का एटलस बनाना है।

ब्रेन के काम करने के जटिल तरीके का राज़ ढूँढ़ने के लिए उसका एक तफ़्सीली कम्प्यूटर मॉडल तैयार करने पर काम जारी है। कनेक्टोमिक्स नाम की अल्ट्रा-माडर्न तकनीक पर बेस्ड बनने वाला यह मॉडल दिमाग की न्यूरो सेल्स के काम करने के तरीके, उनसे रिलेटेड मामलों का पूरा लेखा-जोखा तैयार करेगा यानी दिमाग का एक मुकम्मल मॉडल हमारे सामने होगा। यह रिसर्च किस मरहले में है और इसका फ़्यूचर क्या होगा, यही बता रहे हैं हम इस आर्टिकल में ...

जन्म देता है? ब्रेन के अलग-अलग हिस्सों में मौजूद न्यूरो-सेल्स कैसे और क्या अलग-अलग काम करती हैं?

डॉ. मृसिक-फ़्लोगेल की टीम ने चूहे के ब्रेन के विजुअल कोर्टेक्स पर अपना ध्यान लगाया है। यह हिस्सा आंखों से मिलने वाली इंफार्मेशन की प्रोसेसिंग करता है। चूहे के ब्रेन में हजारों न्यूरोन और अलग-अलग किस्म के लाखों कनेक्शन होते हैं। रिसर्चर्स ने हाई रेज़ोलुशन इमेजिंग के ज़रिए यह पता लगा लिया कि कौन-सा न्यूरोन कौन-सी इंफार्मेशन पर किस तरह से रिएक्शन देता है।

इस तकनीक को कई बार दोहराने के बाद रिसर्चर विजुअल कोर्टेक्स में सैकड़ों न्यूरो-सेल्स के कामों और उनकी कनेक्टिविटी को समझने में कामयाब हो गए हैं।

इस स्टडी से इस बहस का भी हल



निकल आया है कि क्या न्यूरो-सेल्स के बीच के कनेक्शन बेतरतीब हैं या वह न्यूरोन की खास क्वॉलिटीज़ के साथ जुड़े हुए हैं। रिसर्चरों ने साबित किया कि जिन न्यूरो-सेल्स ने एक खास लाईट इंफ़ॉर्मेशन एक जैसा रिएक्शन दिखाया, उनमें अलग-अलग क्वॉलिटीज़ वाली सेल्स के मुकाबले एक साथ जुड़ने की आदत ज्यादा होती है।

रिसर्चर्स को उम्मीद है कि इस तकनीक के ज़रिए विजुअल कोर्टेक्स जैसे ब्रेन के अलग-अलग हिस्सों में न्यूरो-सेल्स की वायरिंग की पिक्चर बनाना मुमकिन हो जाएगा। ब्रेन के बेहद पेचीदा सर्किटों में फिट न्यूरोन के ज़रिए किए जाने वाले कामों को समझने के लिए यह स्टडी बहुत अहम है।

इस तकनीक से ब्रेन के उन हिस्सों की सर्किट वायरिंग का भी पता लगाया जा सकता है जो छूने, एहसास करने और हलचल के लिए ज़िम्मेदार है।

#### शुरूआती कामयाबी

डॉ. मृसिक-फ़्लोगेल का कहना है कि ब्रेन की गुंथियों को सुलझाने की शुरूआत हो चुकी है। एक बार ब्रेन की अलग-अलग परतों में न्यूरो सेल्स के कामों और उनकी कनेक्टिविटी की पूरी तस्वीर सामने आने के बाद हम ब्रेन का कम्प्यूटर मॉडल बनाने की तरफ़ आगे बढ़

सकते हैं। यह मॉडल हमारे दिमाग़ के काम करने के तरीके को दोहरा कर बतलाएगा, लेकिन इस मक़सद को हासिल करने के लिए साइंटिस्टों को कई साल तक बड़ी मेहनत करना होगी। इसके अलावा, इस काम के लिए अल्ट्रा प्रोसेसिंग पावर वाले कम्प्यूटर भी चाहिए।

ब्रेन हमारे जिस्म का बहुत पचीदा हिस्सा है। इसके काम करने के अंदरूनी तरीके को समझना साइंस का एक खास काम है। ताज़ा रिसर्च ने न्यूरो-साइंटिस्टों को इस तरफ़ और आगे बढ़ने का एक सुनहरा मौका दिया है।

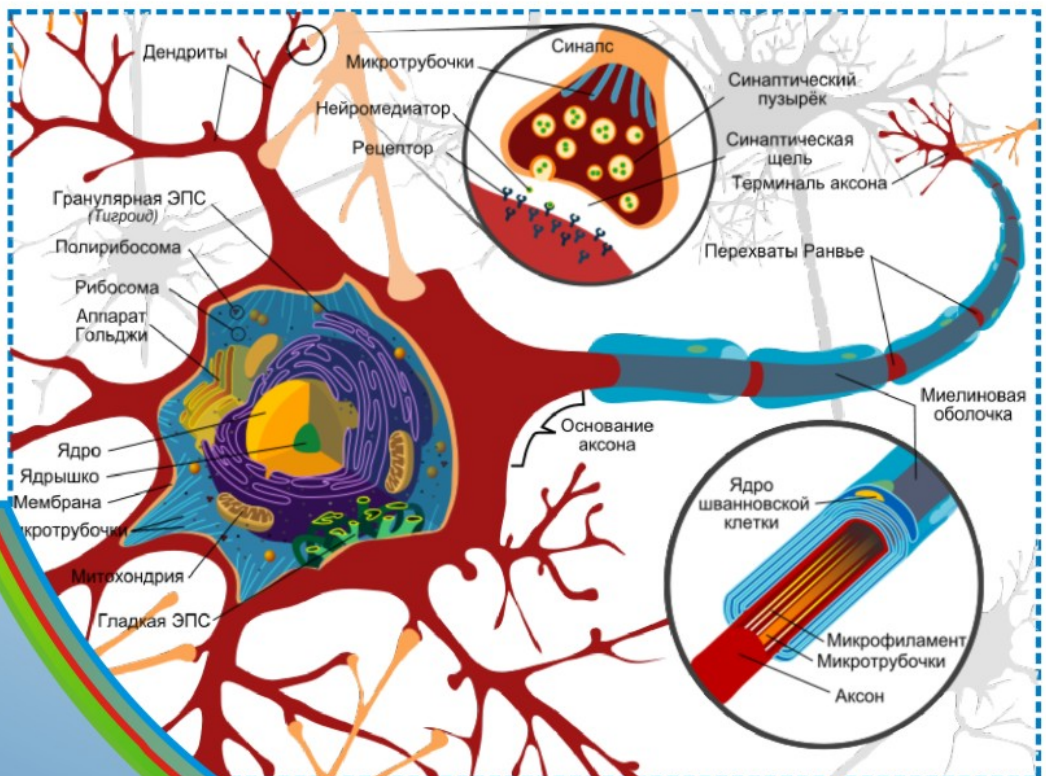
#### ब्रेन का पहला जीन मैप

ब्रेन रिसर्च के मैदान में साइंटिस्टों को एक और बड़ी कामयाबी मिली है। अमेरिका के एलन इंस्टीट्यूट ऑफ़ ब्रेन साइंस ने ह्यूमेन-ब्रेन का पहला तफ़सीली जीन मैप तैयार किया है। इससे ब्रेन को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी। दो ह्यूमेन ब्रेन के जीनों के नक्शों में 94% समानता देखी गयी है। जीन मैप तैयार करने के पीछे खास मक़सद ह्यूमेन ब्रेन का एटलस बनाना है। रिसर्चर्स ने दो ब्रेन के जीन-मैप कम्प्रेटिव

स्टडी के लिए तैयार किए हैं। इससे साइंटिस्ट

न सिर्फ़ यह देख सकते हैं कि किसी ब्रेन में जीन खुद को किस तरह पेश करते हैं, बल्कि वे यह भी पता लगा सकते हैं कि ह्यूमेन ब्रेन कहां-कहां एक जैसे हैं और जीन-मैप में दिखाई देने वाले फ़र्क़ ब्रेन में किस तरह अलग-अलग तरीके से रिएक्ट होते हैं। यह ब्रेन रिसर्च के लिए बहुत अहम चीज़ है।

अभी न्यूरो-बीमारियों की वजहों को खोजने और उनका बेहतर ट्रीटमेंट तैयार करने के लिए रिसर्च चल रही है। ब्रेन एटलस की मदद से रिसर्चर यह जान पाएंगे कि न्यूरो-बीमारियां किस तरह से सामने आती हैं और उनका ट्रीटमेंट कितना कारगर रहेगा। ब्रेन एटलस की बेहतर पहचान से बीमारियों के सही इलाज का रास्ता खुल जाएगा। ●





# एक आइडियल जिंदगी

■ इंजीनियर सै. हसन रज़ा नक्वी

एक आइडियल जिंदगी की कसौटी मासूम इमामों<sup>३०</sup> से बेहतर और कोई नहीं बता सकता और इसके लिए मासूमीन<sup>३०</sup> को पढ़ना बहुत ज़रूरी है मगर हमारी बदकिस्मती यह है कि हमें खाने से लेकर फर्नीचर तक और जिंदगी से लेकर मौत तक 'मेंहगी' चीज़ें ज्यादा पसंद हैं, क्वालिटी चाहे कुछ भी हो। यही हाल एजूकेशन का भी है कि मज़हबी किताबें या तो मुफ्त हाथ आती हैं या बहुत सस्ती मिल जाती हैं जबकि उनमें वह बातें होती हैं जो सीधे खुदा से इल्म की शकल में हम तक पहुंचाई गई हैं और वह सारी किताबें जो इंसान किसी एक इल्म में थोड़ी बहुत महारत हासिल करके ज़ाहिरी फ़िक्र की बुनियाद पर लिखता है, बहुत कीमती होती हैं। हमें इस अहमक़ाना मुहावरे से मुहब्बत भी है 'सस्ता रोए बार-बार, मंहगा रोए एक बार'। जबकि सस्ते-मंहगे से कहीं ज्यादा कीमती किसी चीज़ की क्वालिटी और वैल्यू होती है।

बहेरहाल कहने का मकसद यह है कि मासूमीन<sup>३०</sup> ने हर उम्र के बच्चे और बूढ़े के लिए वह सारी बातें बता दी हैं जो एक आदमी को इंसान बनाती हैं। खून से ही लिखकर सही लेकिन हमारे उलमा बहुत कुछ छोड़ कर गए हैं, हमें सिर्फ़ उसे हासिल करना है।

आज बात करना है चलते-फिरते बच्चों की यानी तीन से सात साल तक के बच्चे। इमाम जाफ़र सादिक<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, "पहले सात साल बच्चे को खेलने दो और अगले सात साल उसकी तालीम व तरबियत की कोशिश करो। अमीरुल मोमिनीन अली<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं, "पहले सात साल बच्चे के बदन की परवरिश करो और अगले सात साल आदाब व अज़्लाक़ सिखाओ।"

दोनों इमामों की बात अगर मिला दी जाए तो नतीजा खुद सामने आ जाएगा कि सात साल तक के बच्चे पर प्रेशर नहीं होना चाहिए। यह उम्र उसकी हर चीज़ डेवलप होने की है यानी बरसात का पौधा। कटाई-छटाई बरसात के बाद की जाती है वरना पौधा न अच्छा फूल देगा न अच्छा फल। आपका बच्चा आपके माहौल से पलता है, आपकी बातों से नहीं। यह कैसे हो सकता है कि आप खुद तो बहुत बड़ी गोश्त खाने वाली हों और बच्चे को सब्जी के फ़ायदे बताती रहें और खिलाने की कोशिश करें। यह नहीं हो सकता।

इस पर सितम यह कि अर्ली-एडमीशन मासूमीन<sup>३०</sup> के इस फ़लसफ़े का गला घोट देते हैं। जापान जैसे डेवलेप्ड मुल्कों में यही बचपन की सख़्तियां बच्चों को 13-14 साल की उम्र में ख़तरनाक तरीन फ़ैसलों की तरफ़ ले जा रही हैं जिनमें हर साल इज़ाफ़ा हो रहा है।

हमारे यहां बच्चे को दुवाएं और सूरे याद कराने का बहुत शौक पाया जाता है जो कि बहुत अच्छी बात है। लेकिन इसके लिए दो बातें ज़रूरी हैं। एक तो खुद भी पढ़ा जाए सिर्फ़ बच्चे से न सुनें। आप रोज़ जो पढ़ेंगे वह उसे खुद ही याद हो जाएगा। इसलिए उसके सामने पढ़िए, सिर्फ़ उससे सुनिए नहीं। दूसरे उसके मायने भी थोड़े बहुत दोहराईए। कम से कम अल्लाह और मासूमीन से मुहब्बत इतनी तो हो ही जाएगी कि आगे के माडर्न स्कूल और इंस्टिट्यूट्स उसे कन्फ़्यूज़ नहीं कर पाएंगे। यह उम्र इन दुवाओं या आयतों के फ़ायदे बताने की नहीं उनके मायने बताने की है। फ़ायदे तो खुद ही सामने आ जाएंगे जो कि अल्लाह का वादा है। बात मारेफ़त यानी दिल और ज़बान से

पढ़ने की है। जो कि मायने जानने के बाद काफ़ी हद तक हासिल हो जाएगी। और फ़ायदे बताने से शुरू से ही बच्चा मज़हब से सौदेबाज़ी करने लगेगा। इस टॉपिक पर अगले इशू में बात होगी।

इसी तरह इस उम्र की बच्चियों के लिए भी ज़रूरी है कि उन्हें पता हो कि इल्म का ताअल्लुक़ दिमाग़ से है लिबास से नहीं और इल्म अगर तहज़ीब के सांचे में ढले तब ही कौम को फ़ायदा पहुंचता है वरना मुसीबत बन जाता है। पहले दूसरों के लिए, बाद में अपने लिए और हमेशा के लिए। मासूमीन<sup>३०</sup> फ़रमाते हैं कि छह साल की लड़की को ग़ैरत सिखाना शुरू कर दो। यानी लिबास अकेले में बदले, जिस्म ढांकने वाले लिबास पहने, ग़ैरों की गोद में न बैठे वगैरा। यह बातें इसलिए ज़रूरी हैं क्योंकि यही एक अच्छे समाज को तैयार करेंगी। और यह तो तय है कि इबरतदार इल्मी समाज बहुत सारे अच्छे असर छोड़ता है। ●



# أخلاق

## अख़लाक़ी बीमारियों का इलाज

पिछले इशूज़ में इल्मे अख़लाक़ के मक़सद, अहमियत और ज़ाती व समाजी ज़िंदगी से उसके रिलेशन को बताया जा चुका है। अब ज़रूरी है कि अख़लाक़ी अच्छाईयों और साथ ही साथ अख़लाक़ी बुराईयों के इलाज को तफ़सील के साथ बताया जाए। लेकिन यहां ज़रा सा रुक कर दो प्वाइंट्स की तरफ़ ध्यान देना ज़रूरी है:-

1- जो लोग अख़लाक़ी बुराईयों और गुमराही का शिकार हैं उनके साथ हमेशा एक मरीज़ जैसा बर्ताव करना चाहिए क्योंकि अख़लाक़ी गुमराही एक तरह की नफ़सियाती बीमारी है और यही बीमारी कभी-कभी जिस्मानी बीमारियां भी पैदा कर देती है या कभी-कभी इसके उलट ऐसा भी होता है कि नफ़सियाती बीमारी जिस्मानी बीमारी की वजह से पैदा हो जाती है। इसलिए इस बारे में भी उन्हीं उसूलों का ध्यान रखना चाहिए जिनका ध्यान जिस्मानी मरीज़ के साथ रखा जाता है।

2- किसी भी बीमारी के इलाज के लिए तीन उसूलों को सामने रखा जाता है:-

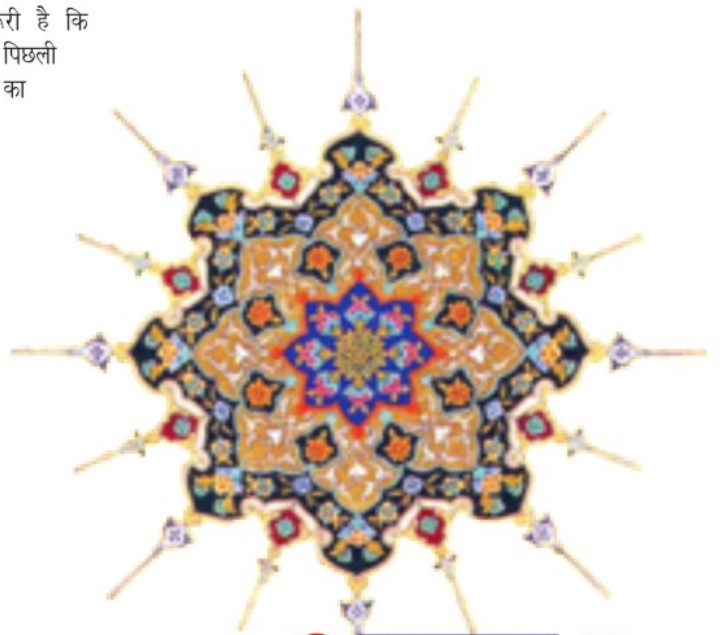
- अ - बीमारी की पहचान
- ब - बीमारी की वजह
- स - बीमारी का इलाज

आम तौर पर बीमारी की पहचान के लिए निशानियों और असर को देखकर बीमारी की पहचान की जाती है। जिस्मानी बीमारियों में बहेरहाल यह पहचान आसान होती है, ख़ास तौर पर मौजूदा दौर में जब टेक्नॉलोज़ी काफ़ी आगे बढ़ गई है। लेकिन अख़लाक़ी मसलों में यह पहचान

बहुत मुश्किल और पेचीदा होती है क्योंकि ज़्यादातर ऐसा होता है कि अलग-अलग बुरी सिफ़तें और बातें जब सामने आती हैं तो एक दूसरे से मिलती-जुलती निशानियों और असर के साथ सामने आती हैं और अगर कुछ अख़लाक़ी बीमारियां एक साथ अपना असर दिखाने लें तो पेचीदगियां और बढ़ जाती हैं। इसलिए ज़रूरी है कि अख़लाक़ी बीमारियों का इलाज करने के लिए इल्मे अख़लाक़ की गहराई के साथ स्टडी और रिसर्च की जाए।

किसी भी अख़लाक़ी बीमारी की वजह को समझने के लिए ज़रूरी है कि अख़लाक़ी मरीज़ की पिछली ज़िंदगी ख़ास कर बचपन का ज़माना, ख़ानदान, आस-पास के समाज, काम-काज और माहौल को समझा जाए। यहां तक कि इसमें विरासत भी बहुत बड़ा रोल अदा करती है क्योंकि वद अख़लाक़ी भी जिस्मानी बीमारियों की तरह कभी-कभी मां-बाप से बच्चे में ट्रांसफ़र हो जाती है। अख़लाक़ी बुराईयों व बीमारियों का इलाज करते वक़्त यह

बात ध्यान में रहना चाहिए कि अगर यह बीमारियां पुरानी हो गई हों तो इस बारे में सब्र और हौसला नहीं टूटना चाहिए और अगर इलाज लम्बा हो जाए तो उससे घबराना नहीं चाहिए लेकिन अगर मर्ज़ हल्का और वक़्ती होगा तो ज़ाहिर है कि उसका इलाज भी कम वक़्त में हो जाएगा। यही वजह है कि बूढ़े लोगों के मुकाबले में बच्चों और नौजवानों की अख़लाक़ी बीमारियों का इलाज आसान होता है क्योंकि बच्चे और नौजवान जितनी जल्दी इन बीमारियों का शिकार होते हैं





तुम किसी के बारे में सही से न जानते हो और उसके दीन को नहीं पहचानते हो तो उसके दोस्तों को देख लो।”<sup>(2)</sup>

रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “इंसान अपने दोस्त और उठने-बैठने वाले के दीन पर होता है।”<sup>(3)</sup>

उतनी ही जल्दी उनसे छुटकारा भी पा लेते हैं। इमाम जाफर सादिक<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “जवानों की तरफ ध्यान दो क्योंकि उनमें नेकी को कुबूल करने की सलाहियत ज्यादा होती है।”<sup>(1)</sup>

### एहतियात

मौजूदा ज़माने की मेडिकल साइंस को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है:- इलाज और एहतियात। इलाज के बारे में बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है। लेकिन एहतियात का मतलब बीमारी के पैदा होने और उसके फैलने की रोकथाम होती है। किसी भी बीमारी की पैदाइश की रोकथाम उसके इलाज से बहेरहाल आसान होती है, इसलिए मेडिकल एहतियात हमारी आम जिंदगी में बहुत खास होती है और इसी वजह से आज कल इस पर सारी दुनिया में एक बड़ा पैसा खर्च किया जा रहा है।

अख़लाकी और रूहानी बीमारियों में भी बिल्कुल इसी तरह दो हिस्से पाए जाते हैं। इसलिए ज़रूरी है कि कोशिश यह की जाना चाहिए कि जहां तक हो सके अख़लाकी बुराईयां और बीमारियां पैदा ही न हों ताकि खुद इन्सान भी और समाज भी इन चीज़ों के ग़लत असर से बचा रह सके। इस बारे में नीचे दी गई बातों की तरफ ध्यान ज़रूरी है:-

### 1- ख़राब और बुरी सोसाइटी से दूर रहिए

यकीनी तौर पर अख़लाकी बुराईयां और बीमारियां ख़राब सोसाइटी की वजह से पैदा होती हैं, बिल्कुल छूत की बीमारी की तरह और अगर बचपन या ना जानने या ईमानी कमज़ोरी वगैरा की वजह से दूसरों की क्वॉलिटीज़ को कुबूल करने के लिए हमारी रूह ज्यादा तैयार हो तो बुरे लोगों के साथ उठना-बैठना बड़ा ख़तरनाक हो जाता है।

अक्सर देखा जाता है कि समाज की वजह से एक इन्सान की जिंदगी पूरी तरह से बदल जाती है। इन्सानी पर्सनैलिटी के संवरने और बिगड़ने में समाज की इस क़द अहमियत है कि कहा गया है कि किसी शख्स को पहचानना हो तो उसके दोस्तों को देख लो। हज़रत अली<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “अगर

ख़राब लोगों के साथ उठना-बैठने से रूह कमज़ोर हो जाती है जिससे सेंसेस भी कमज़ोर हो जाते हैं। साथ ही बुरे काम, बुरे न रहकर अच्छे दिखने लगते हैं। यही वह चीज़ है जिसको हदीसों में ‘दिल का मुर्दा हो जाना’ कहा गया है। रसूले खुदा<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “चार चीज़ें दिल को मुर्दा कर देती हैं, जिनमें से एक मुर्दों के साथ उठना-बैठना है।” सवाल किया गया, “ऐ रसूले खुदा! मुर्दे कौन हैं?” फरमाया, “इस्राफ़ करने वाले दौलतमंद।”<sup>(4)</sup>



बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने से इन्सान बदगुमान हो जाता है और उसके अंदर बुरे ख़्याल पैदा हो जाते हैं। हज़रत अली<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने से नेक लोगों के ख़िलाफ़ बुरे ख़्याल पैदा हो जाते हैं।”<sup>(5)</sup>

बहेरहाल दूसरों के साथ उठना-बैठना इस क़द अहम चीज़ है कि खुदावंदे आलम अपने नबी<sup>ﷺ</sup> को भी बुरे लोगों के साथ उठने-बैठने से मना करता है। लेकिन इसके उलट नेक लोगों के साथ मिलना-जुलना, तरबियत, तज़किए नफ़्स, अच्छे अख़लाक़ और रूहानियत के लिए बहुत ज़रूरी हैं, “और अपने नफ़्स को उन लोगों के साथ सब्र पर तैयार करो जो सुबह व शाम अपने परवरदिगार को पुकारते हैं और उसी की मर्ज़ी के तलबगार हैं और ख़बरदार तुम्हारी निगाहें उनकी तरफ़ से फिर न जाएं कि दुनिया की जिंदगी की

ज़ीनत के तलबगार बन जाओ और कभी भी उसकी इताअत न करना जिसके क़ल्ब को हमने अपनी याद से महरूम कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने वाला है और उसका काम सरासर ज़्यादाती करना है।”<sup>(6)</sup>

रसूले इस्लाम<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “सबसे ज़्यादा कामयाब वह है जो नेक और करीम लोगों के साथ उठता-बैठता है।

### 2- आस-पास के माहौल का सुधार

ख़राब सोसाइटी खास तौर से वह जिसमें गुनाह और बुराईयां ज़्यादा होती हैं, इन्सान के अख़लाकी तौर पर बहक जाने के ख़तरे को बहुत बढ़ा देती है। यह एक ऐसी हकीकत है जिसका इंकार नहीं किया जा सकता। इसलिए अख़लाकी प्वाइंट ऑफ़ व्यू से एहतियात में से एक अपने आस-पास के माहौल की ख़राबियों व अख़लाकी बीमारियों से मुकाबला और गुनाह व बुराईयों की रोकथाम है।

उसूली तौर पर गुनाह और बुराईयों से बचे रहने का बेहतरीन रास्ता इनकी अहमियत और इनसे नफ़रत है। गुनाह और बुराईयां करते रहने से उनसे नफ़रत कम हो जाती है। साथ ही नफ़्स इन्हें

कुबूल करने के लिए तैयार हो जाता है और इसी लिए गुनाहों की अहमियत की वजह से इस्लाम ने हुक्म दिया है कि शरई हुदूद यानी सज़ा को सब के सामने लागू किया जाए:-

“और उस सज़ा के वक़्त मोमिनीन की एक जमाअत को हाज़िर रहना चाहिए।”<sup>(7)</sup>

ताकि इस तरह उनकी नज़र में गुनाह की अहमियत साफ़ हो जाए।

इस्लाम में गुनाह व बुराईयों को दूसरों के सामने करने से बहुत सख़्ती से मना किया गया है। इस्लाम में खुल्लम-खुल्ला फ़िस्क व फ़ुजूर को हुरमत के ख़त्म हो जाने की वजह बताया गया है। इमाम जाफर सादिक<sup>ﷺ</sup> फरमाते हैं, “अगर कोई फ़ासिक़ खुल्लम-खुल्ला फ़िस्क व फ़ुजूर करने लगे तो उसकी हुरमत ख़त्म हो जाती है।”<sup>(8)</sup>



इमाम मुहम्मद बाकिर<sup>१०</sup> फरमाते हैं, “तीन लोगों का कोई एहतेराम नहीं है:- बिदअत जारी करने वाला, ज़ालिम हुक्मरां और खुल्लाम-खुल्ला गुनाह करने वाला।<sup>(९)</sup>

यहां तक कि इस्लामी एतेबार से अख़्लाकी बुराईयों से जुड़े उन वाक़ेआत तक को बयान करने से बचने के लिए कहा गया है जिनसे दूसरों की सोच के ख़राब होने और समाज के गुनाहों की तरफ़ भागने का रास्ता खुलता हो। रसूले खुदा<sup>११</sup> फरमाते हैं, “अगर कोई किसी बुरे काम के बारे में सुने और फिर उसे दूसरों को बताए तो वह उसी के जैसा है जिसने वह काम किया है और अगर कोई किसी नेक काम के बारे में सुने और फिर उसे दूसरों को बताए तो वह उस इन्सान के जैसा है जिसने वह अच्छा काम किया है।<sup>(१०)</sup>

खुलासा यह है कि ख़राब और बुरे समाज व अपने आस-पास के माहौल का सुधार और बुराईयों के फैलने और उन्हें खुल्लाम-खुल्ला अंजाम देने से रोकथाम, अख़्लाकी गुमराही से बचने का एक बहतरीन सोर्स है। इसके बिना बहुत मुश्किल है कि इन्सान पूरी तरह से अपना या दूसरों का अख़्लाकी तौर पर सुधार कर सके।

जिस तरह जिस्मानी बीमारियों से बचने के लिए आबो-हवा और फ़िज़ा की गंदगी को दूर किया जाता है उसी तरह ज़रूरी है कि समाजी ज़िंदगी को भी अख़्लाकी गुमराही जैसी गंदगियों से बचाकर रखा जाए और समाज को अख़्लाकी बुराईयों से पाक किया जाए।

### 3- मुहाजेरत

अपने समाज और आस-पास के माहौल के सुधार के लिए जितनी हो सके उतनी कोशिश करना ज़रूरी है लेकिन अगर यह सारी कोशिशों के बाद भी कोई सुधार न हो रहा हो और इस समाज में रहना अख़्लाकी तौर पर नुकसानदेह हो तो ऐसे समाज की तरफ़ हिज्रत के अलावा कोई रास्ता नहीं है जहां जाकर रहा जा सके।

जिस्मानी बीमारियों में भी ऐसा देखा जाता है कि वह लोग जो अपनी सेहत व सलामती चाहते हैं वह गंदे इलाकों से फ़ौरन दूर चले जाते हैं।

इस्लाम में हिज्रत को एक ख़ास अहमियत दी गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि हिज्रत ही ने इस्लाम की सबसे पहली तारीख़ की बुनियाद रखी है। रसूले इस्लाम<sup>१२</sup> की मक्के से मदीने की तरफ़

हिज्रत गंदे समाज की अलावा और

क्योंकि यही एक रास्ता था जिस पर चलकर ईमान व इस्लाम को फैलाया जा सकता था।

रसूले खुदा<sup>१३</sup> के मुताबिक़ कुछ सच्चे मुसलमानों की मक्के से हबशे की तरफ़ हिज्रत इसका एक दूसरा उमदा नमूना है।

इस्लामी हिस्ट्री में इस्लाम के शुरूआती दौर के मुहाजिरों को एक ख़ास अहमियत मिली हुई है। इस बारे में कुरआने करीम की कई आयतों को देखा जा सकता है। इसके अलावा बहुत सी ऐसी हदीसों भी नक़ल हुई हैं जो गुनाह व शिर्क में डूबे हुए समाजों से पाक समाजों की तरफ़ हिज्रत की अहमियत को बयान करती हैं, “जो भी खुदा की राह में हिज्रत करेगा वह ज़मीन में बहुत ठिकाने और वुसअत पाएगा।”<sup>(११)</sup>

तफ़सीरे मजमउल बयान में इस आयत के तहत रसूले अकरम<sup>१४</sup> से यह हदीस लिखी हुई है,



“अगर कोई शख्स अपने दीन की ख़ातिर एक ज़मीन से दूसरी ज़मीन की तरफ़ हिज्रत करे, चाहे एक बालिशत ज़मीन के बराबर ही क्यों न हो, तो ऐसा शख्स जन्नत का मुस्तहेक़ हो जाता है और वह इब्राहीम<sup>१५</sup> व मुहम्मद<sup>१६</sup> (दो बड़े मुहाजिर पैग़म्बर) के साथ रहेगा।<sup>(१२)</sup>

‘चाहे एक बालिशत ज़मीन के बराबर ही क्यों न हो’ की ताक़ीद से हिज्रत की अहमियत खुद बख़ुद साफ़ हो जाती है। दो अज़ीम रसूलों के साथ रहने की बात इसलिए कही गई है क्योंकि इन दोनों नबियों ने हिज्रत की थी। इब्राहीम<sup>१७</sup> ने बुतपरस्तों और नमरूदियों के सेंटर, बाबुल से शाम व फ़िलिस्तीन की तरफ़ और रसूले इस्लाम<sup>१८</sup> ने मक्के से मदीने की तरफ़ हिज्रत की थी।

“ऐ मेरे ईमान वाले बंदो! मेरी ज़मीन बहुत फैली हुई है इसलिए मेरी ही इबादत करो।”<sup>(१३)</sup>

तफ़सीरे अली बिन इब्राहीम में इस आयत के तहत इमाम हसन असकरी<sup>१९</sup> से नक़ल है, “फ़ासिक़ हुक्मरानों की पैरवी मत करो और अगर तुम्हें डर हो कि वह तुम्हें तुम्हारे दीन से पलट देंगे (तो हिज्रत करो) क्योंकि मेरी ज़मीन बहुत फैली है।”

इस्लामी एहक़ाम के मुताबिक़ ऐसे प्रोग्रामों में शिरकत न करना भी एक तरह की हिज्रत है जहां गुनाह किए जाते हों। यह भी यकीनी तौर पर अख़्लाकी बुराईयों से बचे रहने का एक अच्छा और बेहतरीन तरीका है।

1-वसाएल, 11/447, 2-बिहारुल अनवार, 74/197, 3-उसूले काफ़ी, 2/375, 4-बिहार, 2/128, 5-बिहार, 74/191, 6-सूरए कहेफ़/28, 7-सूरए नूर/2, 8-वसाएल, 8/604, 9-वसाएल, 8/605, 10-वसाएल, 8/609, 11-सूरए निसा/100, 12-बिहार, 9/31, 13. सूरए अनकबूत/56 ●



# जी ललचाए...

## कुकरी टिप्स

1-अगर आप बेसन की पकौड़ी बनाने जा रही हैं तो उसमें एक चम्मच सूजी, एक चम्मच ब्रेड का चूरा और एक चम्मच सरसों का तेल मिला लें। पकौड़ी कुरकुरी बनेगी।

2-गर्म तेल में पकौड़ी तल कर फौरन छलनी में निकाल लें। इन्हें पूरी तरह ठंडा करने के बाद दोबारा तेल में तलें। पकौड़ियां कुरकुरी बनेंगी और तेल भी कम पिएंगी।

3-प्याज की पकौड़ी बनाने के लिए पहले कटी प्याज को कुछ देर के लिए ठंडे पानी में भिगो दें। प्याज में ज़रा सा सिरका भी मिला सकती हैं। जाएगा और अच्छा हो जाएगा।

पकौड़ियां...माहे रमज़ान के बारे में सोचते ही आपके दिमाग में खाने की चीज़ों में सबसे पहले इसी का ख्याल आता है ना! इसीलिए इस बार हम पेश कर रहे हैं मजेदार पकौड़ियां..

## प्याज पकौड़ी

घी: 2 चम्मच  
बेकिंग सोडा: चुटकी भर  
बेसन: 1 कप  
चावल का आटा: 1/2 कप  
बारीक कटी प्याज: 3  
बारीक कटी अदरक: 1 टुकड़ा  
बारीक कटी हरी मिर्च: 4  
लाल मिर्च पाउडर: 1 चम्मच  
बारीक कटी धनिया पत्ती: 1 गुच्छा  
नमक: जाएके के हिसाब से  
पानी: ज़रूरत भर  
तेल: ज़रूरत भर

तरकीब  
दो चम्मच घी और बेकिंग सोडा को एक बाउल में डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। तेल के अलावा और सभी चीज़ों को भी इस बर्तन में डालें और अच्छी तरह से मिक्स करें। कड़ाही में तेल गर्म करें और चम्मच की मदद से गर्म तेल में इन सबको डाल दें। पकौड़ियों को गोल्डन ब्राउन होने तक फ्राई करें चटनी के साथ गर्मागर्म सर्व करें।

## पालक पकौड़ी

पालक: 2 गच्छे  
प्याज: 1  
धनिया पत्ती: 1 गुच्छा  
बेसन: 3 चम्मच  
नमक: ज़रूरत भर  
लाल मिर्च पाउडर: जायके के हिसाब से  
हल्दी पाउडर: 1/2 चम्मच  
तेल: ज़रूरत भर

### तरकीब

पालक, प्याज और धनिया पत्ती को बारीक काट लें। इसे एक बर्तन में डाल लें और उस बर्तन में बेसन, नमक, लाल मिर्च पाउडर और हल्दी पाउडर डालें। एक चम्मच सरसों तेल भी डालें और अच्छी तरह मिलाएं। ज़रूरत हो तो ज़रा सा पानी भी मिला दें। कड़ाही में तेल गर्म करें और इस मिक्सचर के छोटे-छोटे गोले बनाकर उसे फ्राई करें। गर्मागर्म सर्व करें।







सै. आले हाशिम रिज़वी  
यूनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

# नशे की आदत ज़िल्लत और हलाकत

**नशे** की आदत इंसानी ज़ेहन और जिस्म दोनों के लिए बहुत नुक़सानदेह है। नशे की हालत में इंसान ग़लत और सही में तमीज़ करने के लायक़ नहीं रहता। मेडिकल साइंस के मुताबिक़ शराब, अफीम, चरस और गांजे जैसी तमाम नशे वाली चीज़ें कैंसर, लक़्वा, हार्ड-ब्लड प्रेशर और दिल-दिमाग़ से जुड़ी बहुत सी ख़तरनाक बीमारियों की वजह बन जाती हैं। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइज़ेशन (डब्लू. एच. ओ.) की एक रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक़ दुनिया में जितनी बीमारियां पाई जा रही हैं उनमें 25% किसी न किसी नशा देने वाली चीज़ के इस्तेमाल की वजह से हैं। धरेलू झगड़े, खुदकुशी के वाक़ेआत, रेप केसेस और लूटपाट जैसी सामाजिक बुराईयों में नशे की आदत की वजह से और इज़ाफ़ा हो रहा है। यह साबित हो चुका है कि नशा हर हाल में बहुत ख़तरनाक है। यह दिमाग़ पर हावी होकर गुनाहगार बनाता है और जिस्म पर हावी होकर बीमार बना देता है।

अब जबकि हमें यह मालूम हो गया है कि नशा बहुत बुरी चीज़ है तो हमें दीने इस्लाम का शुक्रगुज़ार होना चाहिए जिसने तमाम मुसलमानों की भलाई को ध्यान में रखते हुए उनके लिए शराब और उस जैसी सारी चीज़ों को हARAM कर दिया है। कुरआने मजीद में अल्लाह ने नशाख़ोरी से साफ़ तौर पर मना किया है। इमाम मुहम्मद बाकिर<sup>र</sup> ने फ़रमाया है, “अल्लाह ने अपने बंदों के लिए कुछ चीज़ों को हलाल और कुछ चीज़ों को हARAM करार दिया है। अल्लाह हमारा ख़ालिफ़ है और वह जानता है कि उसके बंदों के लिए कौन सी चीज़ें फ़ायदेमंद हैं और कौन सी चीज़ें नुक़सानदेह। शराब और उस जैसी चीज़ों का इस्तेमाल करने वाला हARAM कामों को करने की ज़रूरत करने लगता है। नशे की आदत सिर्फ़ नुक़सान

पहुंचाती है उससे किसी तरह का कोई भला नहीं होता।”

कुरआन और हदीस दोनों के ज़रिए दीने इस्लाम ने सदियों पहले ही नशाख़ोरी की ख़राबियां उजागर कर दी थीं। इस्लाम के अलावा दूसरे मज़हबों ने भी नशे की आदत को बुरा तो कहा है लेकिन उसे गुनाह नहीं माना है। यही वजह है कि ग़ैर इस्लामी प्रोग्रामों में शराब वगैरा का चलन आम बात है। लेकिन जो लोग इस्लामी क़ानून को मानते हैं वह ज़िल्लत और हलाकत की वजह बनने वाली नशे की आदत से दूर रहते हैं। कुरआन के मुताबिक़ नशे की आदत शैतानी अमल है। ज़ाहिर है कि कोई भी समझदार मुसलमान अपने आपको इंसान से शैतान नहीं बनाना चाहेगा। समाज में होने वाले तमाम वाक़ेआत यह साबित करते हैं कि नशे की हालत में अच्छा-भला इंसान भी शैतानी हरकतें कर गुज़रता है।

नशे वाली चीज़ों के इस्तेमाल के सिलसिले में अक्सर कुछ सवाल भी उठाए जाते हैं। जैसे कि अगर कोई नशे वाली चीज़ दवा की शक्ल में लेनी पड़े तो क्या वह भी हARAM है? इसका शरई जवाब यही है कि अगर किसी मर्ज़ को ठीक करने के लिए सिर्फ़ ज़रूरत के मुताबिक़ कोई नशेवर चीज़ दवा के तौर पर खानी या पीनी पड़े तो हARAM नहीं है। लेकिन वही दवा अगर नशा करने के मक़सद से कोई लेने लगे तो ऐसी सूरत में वह हARAM है। इस्लाम का हर क़ानून इंसानी नेचर को ध्यान में रखकर बनाया गया है। ऐसा ही एक और सवाल उठाया जाता है कि शराब बनाने में अंगूर का इस्तेमाल होता है तो फिर अंगूर खाना जाएज़ और शराब पीना नाजाएज़ क्यों है? इसके जवाब में एक दिलचस्प वाक़ेआ पेश है।

एक बार एक दौलतमंद अफ़सर ने कुछ ख़ास लोगों को अपने घर दावत पर बुलाया। इस दावत में एक



# आपके लेटर्स

बुर्जुग आलिम भी आए थे। अफसर खाने की मेज़ पर अपनी बीवी और बेटी के साथ बैठा। बाकी मेहमान भी खाना खाने के लिए बैठ गए। इत्तेफ़ाक़ से उन बुर्जुग आलिम की कुर्सी अफसर के सामने ही थी। वह बुर्जुग अपनी प्लेट में कुछ फल निकालकर खा रहे थे। उन फलों में अंगूर भी थे। दावत चल रही थी, सभी लोग खा-पी रहे थे। अचानक उस अफसर ने अपने नौकर को कुछ लाने के लिए इशारा किया। नौकर ने अफसर के सामने एक बोतल लाकर रख दी। दरअसल वह बोतल शराब की थी। अफसर ने अपने ग्लास में शराब निकाली और पीने लगा। उस अफसर की यह हरकत सामने बैठे उन बुर्जुग आलिम को बुरी लगी। यह बात वह अफसर भांप गया। उसने तंज़िया लहजे में उन आलिम से कहा, “जनाब! मैं शराब पी रहा हूँ जो अंगूर से ही बनी है जिसे आप बड़े शौक से नोश फ़रमा रहे हैं। फिर मेरा अमल आपको बुरा क्यों लग रहा है?” अफसर की यह बात सुनकर वह आलिम बोले, “आपके साथ यह जो आपकी बेटी साहिबा बैठी हैं, वह आपकी बीवी से ही बरामद हुई हैं। इसलिए क्या आप दोनों के साथ एक जैसा रिश्ता बना सकते हैं? ज़ाहिर है कि जिस एतेबार से आपकी बीवी आपके लिए हलाल हैं उस एतेबार से बेटी हराम है।” अफसर उन आलिम का जवाब सुनकर शर्मिंदा हो गया। उसने फ़ौरन अपने नौकर को हुक्म देकर दस्तरख़्वान से शराब हटवा दी।

इस्लाम ने अपने क़ानून में सख्ती और आज़ादी बड़े सही तरीक़े से रखी है। ●

एडीटर साहब  
सलामुन अलैकुम

मैगज़ीन बराबर मिल रही है और हर बार एक नए अंदाज़ के साथ। पिछले इशू में यूँ तो सारे ही आर्टिकल अच्छे थे लेकिन ख़ास कर आले हाशिम साहब का ‘ज़लज़ले’ वाला आर्टिकल बहुत पसंद आया। हमारे यहाँ की किसी भी दीनी मैगज़ीन में शायद इस तरह का यह पहला आर्टिकल था। आले हाशिम साहब बड़ी मेहनत और रिसर्च करके लिखते हैं। खुदा उनके क़लम को और मज़बूत करे!

मौलाना हैदर अब्बास, नौगावां सादात

सलामुन अलैकुम

मैंने तो अभी तक हिंदुस्तान में ‘मरयम’ जैसी कोई दीनी मैगज़ीन देखी नहीं है। यही वजह है कि हर महीने बड़ी शिद्दत से इसका इंतज़ार रहता है। मेरे घर का एक-एक मिम्बर इसे बड़े शौक से पढ़ता है। मेरी दो बेटियाँ हैं और दोनों ही इसकी जैसे दीवानी हैं। अपनी सारी दोस्तों को ज़बरदस्ती पढ़वाती हैं।

पिछले माहे रमज़ान में मरयम का पहला इशू आया था और अब फिर माहे रमज़ान आ गया है। देखते ही देखते एक साल गुज़र गया। खुदा मरयम को बुरी नज़र से बचाए!

आमेना बेगम, गाज़ियाबाद

जनाब एडीटर साहब  
अस्सलामो अलैकुम

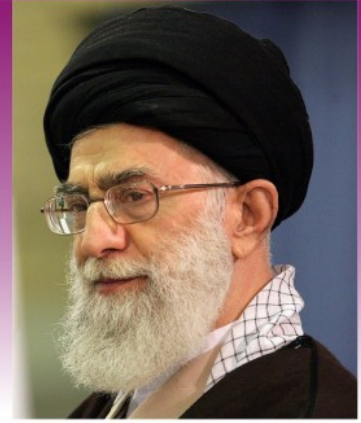
आपको यह जान कर बड़ी खुशी होगी कि मैं दिल्ली के यमुना विहार इलाक़े में एक मदरसे में पढ़ने जाती हूँ। वहाँ हम ने एक काम यह किया है कि हिन्दी से उर्दू डिक्शन के लिए हमारी क्लास ने ‘मरयम’ को चुना है। हम लोग रोज़ाना ‘मरयम’ से उर्दू डिक्शन करते हैं। इसमें हमारे टीचर का भी बहुत बड़ा हाथ है। क्योंकि उन्होंने ही हमें ऐसा करने के लिए कहा था। इस काम का एक बहुत बड़ा फ़ाएदा यह हो रहा है कि हम सब मरयम को पढ़ भी लेते हैं और इसी के सहारे उर्दू भी सीख रहे हैं।

सकीना बतूल, दिल्ली





# रोज़े के अहकाम



**सवाल 1:** लड़की पर किस उम्र से रोज़ा रखना ज़रूरी है।

**उ०:** लड़की चांद के महीनों के हिसाब से पूरे 9 साल की हो जाये तो उसपर रोज़ा रखना वाजिब है।

**सवाल 2:** अगर लड़की 9 साल की हो जाये मगर कमज़ोरी की वजह से रोज़ा न रख सकती हो तो उसके रोज़े का क्या हुक्म है?

**उ०:** सिर्फ कमज़ोरी की वजह से रोज़ा रखने से नहीं बच सकती है हॉ अगर रोज़ा रखने से उसे नुक़सान पहुचने का ख़ौफ़ हो तो रोज़ा नहीं रखेगी मगर उसकी क़ज़ा उसपर ज़रूरी है।

**सवाल 3:** अगर सेहरी के वक़्त आँख न खुले तो क्या उस दिन का रोज़ा यह सोच कर छोड़ा जा सकता कि रमज़ान के बाद क़ज़ा कर लेंगे?

**उ०:** सहर में आँख न खुलने से रोज़ा नहीं छोड़ा जा सकता और अगर कोई बग़ैर किसी ऐसी वजह के रोज़ा छोड़ दे जिसकी शरीअत ने इजाज़त दी है तो उस रोज़े की क़ज़ा और कफ़ारा दोनो वाजिब हैं।

**सवाल 4:** जान बूझ कर माहे रमज़ान के रोज़े छोड़ने का कफ़ारा क्या है?

**उ०:** माहे रमज़ान के एक रोज़े को बग़ैर किसी वजह के छोड़ने का कफ़ारा इन तीन चीज़ों में से एक है:

एक गुलाम आज़ाद करे या साठ मिसकीनों को खाना खिलाए या दो महीने रोज़े रखे जिसमें 31 रोज़े लगातार रखे जायेंगे।

**सवाल 5:** क्या रोज़े की हालत में भूले से कुछ खाने से रोज़ा बातिल हो जाता है?

**उ०:** नहीं।

**सवाल 6:** अगर रमज़ान में किसी लड़की को मेन्सेस शुरू हो जायें तो उसके रोज़े का क्या हुक्म है?

**उ०:** अगर लड़की रोज़े से हो तो उसका रोज़ा बातिल हो जायेगा और जब तक उसके पीरियड ख़त्म नहीं होंगे वह रोज़ा नहीं रखेगी मगर रमज़ान के बाद उन रोज़ों की क़ज़ा करेगी।

**सवाल 8:** प्रेग्नेंट औरत के लिये रोज़े का क्या हुक्म है जबकि रोज़े की वजह से उसके बच्चे को नुक़सान का ख़तरा हो?

**उ०:** प्रेग्नेंट औरत पर भी रोज़ा रखना वाजिब है लेकिन बच्चे को नुक़सान पहुचने का ख़तरा किसी माकूल वजह से हो तो उसके लिए रोज़ा छोड़ना वाजिब है। (बाद में क़ज़ा करना होगी)

**सवाल 9:** मैं अपने बच्चे को दूध पिलाती हूँ। अगर मैं रमज़ान में रोज़ा रखूँगी तो मेरा दूध खुश्क हो जायेगा ऐसे में क्या मैं रोज़े छोड़ सकती हूँ?

**उ०:** अगर रोज़े की वजह से दूध खुश्क हो जाये या कम हो जाये जिससे बच्चे को ख़तरा पैदा हो तो आपके लिये रोज़ा ना रखना जायज़ है लेकिन आपको हर रोज़े के बदले 750 ग्राम अनाज फ़कीर को देना होगा और छूटे हुये रोज़ों की क़ज़ा भी करनी होगी।

**सवाल 10:** अगर कोई बीमार हो और बीमारी में रोज़ा रखने से उसे नुक़सान पहुँच सकता हो तो उसके रोज़े का क्या हुक्म है?

**उ०:** अगर यह यकीन हो कि रोज़ा नुक़सानदेह है तो रोज़ा रखना हराम है (मगर ठीक होने के बाद क़ज़ा ज़रूरी है)।

**सवाल 11:** रोज़े की हालत में इन्जेक्शन लगवा सकते हैं?

**उ०:** रोज़े की हालत में हर तरह के इन्जेक्शन लगवाये जा सकते हैं लेकिन आयतुल्लाह ख़ामेनई के नज़दीक ताक़्त वाले और रग में लगवाने वाले इन्जेक्शन (एहतियाते वाजिब की बिना पर) नहीं लगवाये जा सकते।

**सवाल 12:** रोज़े में बी.पी. कंट्रोल करने की दवा खा सकते हैं?

**उ०:** अगर बी.पी. या किसी भी बीमारी के इलाज के लिए दवा खाना ज़रूरी हो तो खा सकते हैं मगर रोज़ा बातिल हो जायेगा और बाद में उसकी क़ज़ा करना होगी।

**सवाल 13:** अगर रोज़े में शौहर अपनी बीवी के साथ हमबिस्तरी करे तो क्या हुक्म है?

**उ०:** मियाँ-बीवी दोनों का रोज़ा बातिल हो जायेगा और दोनों को क़ज़ा ओर कफ़ारा अदा करना होगा।

**सवाल 14:** मैं बहुत ज़्यादा शक्की हूँ। हर चीज़ के बारे में मुझे शक़ रहता है, नजिस-पाक के बारे में तो बहुत ज़्यादा, रोज़े में भी शक़ होता है कि ख़ाक़ और गुबार हलक़ में तो नहीं चला गया, जो पानी वुजु करते वक़्त मुँह में डाला था वह हलक़ से नीचे उतरा था कि नहीं, इस तरह के शक़ के बाद मेरा रोज़ा सही है कि नहीं?

**उ०:** आपका रोज़ा सही है और इस तरह के शक़ की कोई हैसियत नहीं है। ●





# भरोसा

■ परवीन हैदर

“ज़रा इस लड़की को देखो! इसका कोई काम लड़कियों वाला नहीं है। हर वक्त उछलती-कूदती रहेगी या छलांगें लगाएगी।” यह मेरी अम्मी की आवाज़ थी जो चौबीस में से बीस घंटे मुझे लगातार सुनाई देती यानी सोते में भी।

अम्मी हर वक्त मुझे टोकती रहती थीं। “सीमा! बैठ जाओ!, सीमा भागो नहीं!, सीमा शैतानी मत करो!” अगर मैं बॉल हाथ में ले लेती तो कहतीं, “क्रिकेट तो लड़कों का खेल है।” अगर मैं लंगड़ी टांग खेलती हूँ तब भी अम्मी कहतीं, “तुम्हें स्कूल का कोई काम नहीं है क्या?” पता नहीं क्या मुसीबत थी। सब चाहते थे कि मैं बस हर वक्त बैठी ही रहूँ। सबसे बुरा वक्त वह होता था जब अम्मी को कहीं बाहर जाना होता। वह मुझे घर में बंद कर देतीं और बाहर से ताला लगाकर चाबी बराबर वाली परवीन ख़ाला को दे जातीं! परवीन ख़ाला की बेटी हिना मेरी क्लास फ़ेलो थी। अम्मी हमेशा हिना की तारीफ़ें किया करतीं थीं। “उसे देखो! कितना कहना मानती है!” लेकिन मुझे मालूम था कि हिना कोई इतनी भी अच्छी नहीं थी। उसकी शक्ल बस ऐसी थी कि बड़ी मासूम सी लगती और कोई उस पर शक नहीं कर सकता था। मेरे साथ मुश्किल शायद यह थी कि मैं शक्ल से ही शरारत लगती थी। लोग मुझे देखते ही कहते, “इसकी तो आंखों से शरारत टपक रही है।”

एक दिन अम्मी कहीं बाहर जा रही थीं। जाने से पहले हमेशा की तरह उन्होंने मुझे हज़ारों नसीहतें कीं। जैसे आराम से रहना, शोर मत करना, होम

वर्क कर लेना, अली की चीज़ों में मत घुसना, चूल्हा मत जलाना वगैरा-वगैरा। फिर वह दरवाज़ा लाक करके चली गई।

मैंने अपने आप से कहा, “आज मैं अच्छी बच्चियों की तरह रहूंगी ताकि अम्मी को मुझ पर भरोसा हो जाए।” इसलिए मैंने फ़ौरन स्कूल का होम वर्क पूरा कर लिया। फिर टी.वी. खोल कर बैठ गई लेकिन इसमें बहुत बोर प्रोग्राम आ रहे थे इसलिए बहुत जल्द थकन का एहसास होने लगा। मैं उठ कर खिड़की के पास आई और खिड़की से बाहर सेहन में देखने लगी। मेरा दिल चाह रहा था कि मुझे पर लग जाएं और मैं उड़ कर खिड़की से बाहर निकल जाऊं लेकिन मैं ऐसा सिर्फ़ सोच ही सकती थी। इसलिए चुपचाप दोबारा अपनी जगह आकर बैठ गई।

अचानक मुझे दरवाज़े का लॉक खुलने की आवाज़ आई। पहले तो मैं समझी कि अम्मी आ गई हैं लेकिन अम्मी इतनी जल्दी नहीं आ सकती थीं। इतनी देर में दरवाज़ा खुला और हिना अंदर आ गई। मैंने पूछा, “हिना! अंदर कैसे आई?”

“मैं चुपके से तुम्हारी चाबी अपने घर से उठा लाई हूँ। चलो जल्दी से बाहर आ जाओ ! चलकर खेलते हैं।” हिना







नहीं गई थीं। मैंने सारे बर्तन एहतियात के साथ धोए और उन्हें शेल्फ में लगा दिया। अम्मी मुझे कभी बर्तनों को हाथ नहीं लगाने देती थी क्योंकि मैं उछल-कूद में कई बर्तन तोड़ चुकी थी लेकिन मुझे खुद भी ताअज्जुब हो रहा था कि आज मैंने इतने बर्तन धोए और एक भी नहीं टूटा था। मैं वापस कमरे में आई और खिड़कियां दरवाजे बिस्तर वगैरा सब झाड़-पोंछ कर खूब साफ-सुथरे कर दिए। फिर एक कहानी की किताब लेकर लेट गई। किताब के अलफाज़ बड़े मुश्किल थे, बिल्कुल समझ में नहीं आ रही थी। यूँ ही उस पर बनी हुई तस्वीरें देखती रही। कुछ देर बाद ही बाहर का दरवाज़ा खुला और अम्मी घबराई हुई आवाज़ें देती अंदर आई। “सीमा कहाँ हो? सीमा! सीमा!” मैं जल्दी से उठ खड़ी हुई।

“क्या हुआ अम्मी?” मैंने घबराकर पूछा।

“कुछ नहीं बेटा! दरवाज़ा ठीक से लॉक नहीं था। मैं समझी तुम बाहर निकल गई हो। कोई आया था क्या?” अम्मी ने पूछा।

“अम्मी मैं तो घर ही में हूँ। वह हिना आई थी। उसने बहुत कहा बाहर चलने को लेकिन मैं नहीं गई।” अम्मी मेरी बात सुनने के बजाए पूरे कमरे पर नज़र डाल रही थीं।

“लगता है कि आज तुमने कोई शैतानी नहीं की है। हर चीज़ सलीके से अपनी जगह रखी हुई है।” अम्मी यह कहकर किचन में चली गई और धुले हुए बर्तन देखकर तो बहुत ही खुश हुई। मुझे प्यार किया और कहने लगी, “बस बेटी! अब तुम बड़ी हो गई हो। मेरे ख्याल में अब मुझे दरवाजे बाहर से लॉक करने की ज़रूरत नहीं है।”

“अम्मी! अब मैं जाऊँ खेलने के लिए?” सीमा ने अदब से पूछा।

“हां जाओ लेकिन देखो ख्याल रखना।” फिर हंसते हुए कहने लगी, “नहीं, नहीं! अब मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। अब तुम अपना ख्याल खुद रख सकती हो। जाओ जाकर खेलो।” ●

ने जवाब दिया।

मेरा तो पहले ही बाहर जाने को बहुत दिल चाह रहा था लेकिन मैंने दिल में सोचा कि आज तो मैंने अम्मी को भरोसे में लेने का पक्का इरादा किया है। इसलिए मैंने कहा, “नहीं! मैं नहीं आ रही, तुम जाओ!”

हिना बहुत देर तक कहती रही लेकिन वह मुझे बाहर जाने पर राजी न कर सकी। थक हार कर हिना कहने लगी, “ठीक है मैं जा रही हूँ। ज़ेहरा के साथ खेल लूंगी।”

ज़ेहरा का नाम सुनकर मेरा दिल एक बार फिर ललचाया लेकिन फौरन ही मुझे अपना फैसला याद आया और साथ ही वह दिन भी जब एक रोज़ हम तीनों क्रिकेट खेल रही थीं। हिना ने ज़रा ज़ोर से हिट लगाई। बॉल सीधी ज़ाहिद अंकल की खिड़की पर जा लगी। शीशा टूटने की आवाज़ पर वह बाहर आए। ज़ेहरा और हिना तो फौरन भाग गईं लेकिन ज़ाहिद अंकल ने मेरी खूब अच्छी तरह खबर ली। यह सोच कर मैंने अपना रुख टी.वी. की तरफ़ फेर लिया और रिमोट दबा कर टी.वी. ऑन कर दिया। टी.वी. पर अभी तक वही प्रोग्राम चल रहा था और मैं बड़ी बोर हो रही थी। उठकर किचन में गई। नाश्ते के बर्तन सिंक में ऐसे ही रखे हुए थे। अम्मी जल्दी की वजह से धोकर





# होंठ

होंठ इंसान और जानवर के जिस्म का बड़ा अहम हिस्सा हैं। खास तौर पर इंसान के जिस्म में होंठ बहुत से कामों में इस्तेमाल होते हैं। मौजूदा साइंसी रिसर्चस के मुताबिक होंठों के इंसानी जिस्म में बड़े अहम फंक्शंस हैं जो इस तरह हैं:-

होंठ हमारे खाने-पीने को आसान बनाते हैं। होंठों की अपनी अलग मांसपेशियां होती हैं जिनकी मदद से होंठ किसी भी शेष में आसानी से आ जाते हैं। यह खाने को पकड़ का मुंह के अंदर डाल सकते हैं। साथ ही यह मुंह को एयर-टाइट तरीके से भी बंद कर सकते हैं ताकि खाना और पानी मुंह के अंदर ही रहे, बाहर न निकल जाए। और साथ ही धूल और मिट्टी जैसी चीजों को जो जिस्म को नुकसान पहुंचा सकती हैं, मुंह के अंदर जाने से रोकते हैं। होंठों के ज़रिए पतली सुरंग बनाकर इंसान अपने चूसने की पावर बढ़ा लेता है, जिससे पानी, कोल्ड ड्रिंक और दूसरी बहुत सी चीजें इंसान आसानी से चूस लेता है। चूसने की ये ताकत नौनिहालों में मां का दूध पीने के लिए बहुत अहम होती है।

होंठों पर बहुत सी नर्व सेल्स जाकर ख़त्म होती हैं। जिसकी वजह से यह हर तरह की

फीलिंग्स के लिए बड़े सेंसिटिव होते हैं। गर्मी, सर्दी और स्पर्श का एहसास इन्हें फौरन हो जाता है। इसलिए छोटे बच्चों में यह अंजान चीजों की पहचान का बहुत अच्छा ज़रिया होते हैं। अपने नर्व-सेल्स की वजह से औरत-मर्द के बीच क़रीबी रिश्ते बनाने में भी होंठ अहम रोल निभाते हैं। साथ ही इंसान सेहतमंद है या बीमार, भूखा है या उसे प्यास लगी है, इसका अंदाज़ा भी उसके होंठों को देखकर लगाया जा सकता है।

इंसान की बोलने में भी होंठ अहम रोल निभाते हैं। कुछ हर्फ़ ऐसे होते हैं जिनको होंठों के ज़रिए ही अदा किया जा सकता है। इन हर्फ़ों को लेबियल कहा जाता है। इनमें बाइलेबियल ऐसे हर्फ़ होते हैं जिनमें दोनों होंठों का इस्तेमाल होता है। जैसे म, प, ब वगैरा और लैबियोडेंटल कन्सोनेंट ऐसे हर्फ़ होते हैं जिनमें निचले होंठ और ऊपरी दांत का इस्तेमाल होता है। यह हैं फ, व वगैरा। होंठों को गोलाई में सिकोड़ कर इंसान बहुत सी आवाज़ें निकाल सकता है और बहुत से म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स जैसे बांसुरी, माउथ-आर्गन, सेक्सोफोन वगैरा बजा लेता है।

होंठों के बारे में जो भी रिसर्चस मिलती है,

उनमें हमारे मासूम इमामों का अहम रोल नज़र आता है। और इस बात के पूरे सुबूत मौजूद हैं कि होंठों के बारे में जितनी अहम बातें हमारे इमामों ने बताई हैं, उनसे पहले और किसी ने नहीं बताई। किताब 'तौहीदुल अईम्मा' में इमाम जाफ़र सादिक<sup>रज़ी</sup> की एक बड़ी अहम हदीस है जिसमें होंठों के बारे में कुछ इस तरह बयान किया गया है:-

“होंठों के ज़रिए से इंसान पानी को चूस सकता है ताकि जो पानी पेट के अंदर जाए वह एक खास अंदाज़े के साथ और इरादे के साथ जाए जिससे पीने वाले के गले में फंदा न लगे, न कि गुरगुराता हुआ वह जाए और ज़ोर से वह कर अंदर जाने की वजह से किसी अंदरूनी हिस्से में ख़राश न पड़ जाए। इसके अलावा यह दोनों होंठ दरवाज़े जैसे हैं जो मुंह को ढांके रहते हैं जब आदमी चाहे खोल ले और जब चाहे बंद करे।”

यकीनन यह जानकारी साइंस के नज़रिए से पूरी तरह सही है। इमाम साफ़-साफ़ कह रहे हैं कि होंठ खाने-पीने को सही मिक़दार में मुंह के अंदर ले जाने में बड़ा अहम रोल निभाते हैं। इमाम बता रहे हैं कि होंठों के चूसने की खासियत बड़ी अहम चीज़ है। जैसा कि मौजूदा साइंस का भी नज़रिया है कि पानी पीना और छोटे बच्चों का दूध पीना इसी खासियत की वजह से पॉसिबिल हो पाता है। इमाम ये भी बता रहे हैं कि होंठों का दरवाज़े जैसा काम आना भी जिस्म के लिए बहुत ज़रूरी है। मौजूदा साइंस भी कहती है कि ये मुंह को एयर-टाइट तरीके से बंद कर सकते हैं। ताकि खाना और पानी मुंह के अंदर ही रहे, बाहर न निकल जाए। साथ ही धूल और मिट्टी जैसी चीजें जो जिस्म को नुकसान पहुंचा सकती हैं, मुंह के अंदर न जाने पाएं।

आज साइंस होंठों के बारे में जो भी रिसर्च करके बता रही है, इमाम जाफ़र सादिक<sup>रज़ी</sup> उसे बारह सौ साल पहले बड़ी बारीकी के साथ और बड़े आसान अलफ़ाज़ में बता चुके थे। यही है करिश्मा इस्लाम और उसकी सच्चाई का। ●





# मुसलमान औरत और साम्राज

■ समीहा राहील काज़ी

डिमाँक्रेसी के इंटरनेशनल-डे पर फ्रांस की पार्लियामेंट में हिजाब पर मुकम्मल पाबंदी के बिल पर वोटिंग हुई और बिल को एक के मुकाबले में २४६ वोटों से पास करा लिया गया। फ्रांसीसी मुसलमानों ने बड़ी मुहब्बत के साथ फ्रांस की तरक्की में अपना रोल अदा किया, फ्रांस के कानूनों पर अमल किया और जब १९८६ और फिर १९८२ में कुछ स्टूडेंट्स को स्कार्फ से मना किया गया तो अदालत ने उसे टुकरा कर हिजाब के हक में फैसला दिया। हिजाब के खिलाफ जारी मुहिम ने एक बार फिर ज़ोर पकड़ा और ११ दिसम्बर २००३ को मुल्क के सारे सरकारी इमारतों में हिजाब पर पाबंदी लगा दी गई।

अलग-अलग फ्रांसीसी लीडर्स की तरफ से इसके लिए ओछी दलीलें पेश की जा रही हैं। हमारे मुल्क में भी फ्रांस के एम्बेसेडर ने अखबारों के ज़रिए बड़े अच्छे अंदाज़ में कहने की कोशिश की है कि इस पाबंदी का मक़सद मुस्लिम औरतों को बराबरी की सतह पर लाना है। दूसरे अलफाज़ में हिजाब पिछड़ा होने की निशानी है जिससे हम आज़ादी दिलाना चाहते हैं मगर यह एक ग़ज़ का टुकड़ा जिसे नकाब या हिजाब कहते हैं, इंसानी हिस्ट्री में

शायद ही किसी इतनी छोटी सी चीज़ को इतना ताक़तवर माना गया हो कि इस पर पार्लियामेंट में बिल पास कराए जाते हों, इससे इतना डरा जाता हो और उसे जो कभी पिछड़ा होने की निशानी समझा जाता था आज आज़ादी और पॉलिटिकल इस्लाम का परचम समझ कर उसके खिलाफ कानून बनाए जा रहे हैं। इन सब बहानों के बावजूद असल हकीकत यह है कि मुसलमान

औरत के पर्दे और नकाब ने फ्रांस और यूरोप के अरबों डालरों की फैशन इंडस्ट्री को अपने पांव की ठोकर पर रखा हुआ है और हमारे मुक़द्दस और पाक पर्दे ने फ्रांस के गंदे और न्यूड कल्चर को ख़तरे में डाल दिया है।

ताअज्जुब की बात यह है कि यूरोप के किसी भी हिस्से में नंगेपन पर वह पाबंदी नहीं है जो कपड़े पहनने पर है। इस्लामी कल्चर में औरत और मर्द एक दूसरे को पूरा करते हैं और एक दूसरे की सलाहियतों को परवान चढ़ाने में मदद देते हैं। यह दो ताक़तें आमने-सामने नहीं बल्कि ज़िंदगी की गाड़ी के दो पहिए हैं जो कि हकों, अज़्र, सवाब और अज़ाब में बिल्कुल बराबर और अपनी ज़िम्मेदारियों में अलग-अलग रोल अदा करते हैं। इसमें औरत का रोल मां और बीवी की हैसियत से उतना ही अहम है जितना एक मुल्क के लिए लीडर, फौज और कानून का होता है। औरत की ममता और बीवी के रोल को बेकार और उसे औरत की तरक्की की राह में रुकावट समझने का ख़याल पूरे कल्चर को मलियामेंट करने के बराबर है।

खुदा ने औरत के हिस्से में इंसान को इंसान बनाने की जो अहम





ज़िम्मेदारी डाली है उसमें उसका नेचर यह डिमांड करता है कि उसे मुहब्बत और हिफाज़त से किसी कीमती चीज़ और कीमती फ़रीज़े को पूरा करने की धुन में लगी हुई हस्ती की तरह रखा जाए और उसे दुनिया के झमेलों और झंझटों से अलग एक सुकून के माहौल में रखा जाए, तभी इस ज़मीन पर अच्छी और कल्चर्ड नस्ल परवान चढ़ सकेगी, जिसको घर की खूबसूरत दुनिया की मुहब्बत मिली होगी वही दुनिया को मुहब्बत और प्यार लौटा सकेगा। वरना आज की दुनिया इसीलिए फ़साद और बुराईयों से भर गई है क्योंकि औरत ने अपने बुनियादी फ़रीज़े को फ़ालतू और बेकार समझ कर छोड़ दिया है या उस पर दूसरों ने अपने नज़रिए को थोप दिया है और इससे दूर भागने में ही औरत अपनी तरक्की समझ बैठी है। घर जो कि दुनिया की बुनियादी इकाई है उसे ममता और घर के प्यार और मोहब्बत से खाली करके मार्केट बना दिया गया है और खुद औरत भी एक सराए और होटल में बदल कर मुहब्बत और प्यार से खाली हो गई है। इसलिए हमें वापस शादी, घर, फैमिली और ममता को बाकी रखने के लिए सीरियस हो जाना चाहिए।

इस बारे में जो दूसरा बुनियादी हक़ औरत की हिफाज़त और इज़्ज़त के लिए अल्लाह तआला ने बताया है वह एक साथ और एक जगह काम करने के बजाए मर्द-औरत के अपने-अपने कल्चर के मुताबिक़ अपनी हदों में काम करने को बढ़ावा देना है। इसके बाद जब भी ज़रूरी हो वह इस्लामी हिजाब में घर से बाहर के कामों को कर सकती है। पूरी इस्लामी हिस्ट्री इस बात की गवाह है कि शुरु

से लेकर आज की मॉडर्न दुनिया तक हिजाब मुसलमान औरत का बुनियादी फ़रीज़ा रहा है, जिसको वह किसी शौक, फैशन, ज़बरदस्ती, पाबंदी, मर्दों के हुक्म, समाज के रिवाज की वजह से नहीं बल्कि अल्लाह के हुक्म और कुरआन के बताए हुए फ़र्ज़ और नबीए करीम<sup>०</sup> की तरफ़ से लागू किए गए क़ानून की वजह से करती है और उसे अपने लिए फ़ख़्र समझती है लेकिन शैतानी ताकतों मुसलमान औरत के इस बुनियादी हक़ को सेकुलॉरिज़्म के खिलाफ़ भड़काने वाला निशान बनाकर आतंकवाद के सिम्बल के तौर पर मशहूर कर रही हैं।

ख़ासकर नकाब वाली औरत को आतंकवादी और पिछड़ी हुई औरत के तौर पर पेश किया जा रहा है जिसको मुस्लिम समाज कभी भी कुबूल नहीं करेंगे चाहे दुश्मन ताकतों के लिए कितनी भी डर की निशानी क्यों न हों।

मैं यहां पर यह बात भी क्लियर करना चाहती हूं कि इस्लाम बातचीत, मेल-मिलाप, अमन व अमान और मुहब्बत का दीन है। मुसलमान औरत इन्ही नज़रियों के साथ परवान चढ़ती है। वह आज भी दुनिया को अमन का गहवारा बनाने और 'जियो और जीने दो' के उसूलों पर इस ज़मीन को मुहब्बत और अमन व अमान की आगोश में देने के लिए हाथ-पैर मार रही है। मगर आज इसके लिए पर्दे की पाबंदी, घर में बुनियादी रोल और मॉडर्न समाज की तबाहियों से बच कर महफूज़ और मुहब्बत भरी पनाहगाहों में रहने को शक की नज़र से देखा जा रहा है, उसकी अहमियत को कम करने की कोशिश की जा रही है। आज उसी औरत की अहमियत है जो मर्द की तरह सोचे, मर्द की तरह जिए और यहाँ तक कि मर्द की तरह लिबास पहने...!

पूरब और पश्चिम में आज की जागने वाली नई मुसलमान औरत हर तरह के आतंकवाद से खुल्लम-खुल्ला जंग का ऐलान करते हुए इस बात का इरादा कर रही है कि अपनी तहज़ीब और

अपने कल्चर पर किसी की ज़बरदस्ती को बर्दाश्त नहीं करेगी। चाहे इसके लिए उसे कितनी ही कुरबानी क्यों न देना पड़े। और हम दुनिया की कौमों और उनके इदारों से भी यह उम्मीद रखते हैं कि ज़बरदस्ती अपनी तहज़ीब और कल्चर को थोपने के बजाए वह बातचीत, बहेस और एहतेराम व मिलनसारी के उसूलों को अपनाएंगे ताकि हम कल्चर्ड समाज को बनाकर कल्चर्ड कौमों से इस ज़मीन को कल्चर्ड और अमन व अमान की जगह बना सकें। ●





**खुदावंदे आलम** ने खुशी और ग़म को इंसान के नेचर में रखा है। यूँ तो हर इंसान की ज़िंदगी में ऐसे लम्हे आते रहते हैं जब वह खुश होता है या परेशान होता है क्योंकि खुशी और ग़म एक दूसरे के साथ-साथ रहते हैं। हर खुशी के पहलू में एक ग़म होता है और हर आंसू के साथ एक मुस्कुराहट। लेकिन खुदा ने कुछ दिनों को अपना कहकर बंदों को अपने नेचरल जज़्बात ज़ाहिर करने का मौका दिया है।

पूरे एक महीने रोज़े रखने, कुरआन की तिलावत और बहुत सी इबादतें करने वाले बंदों के लिए उसने एक खुशी का मौका रखा है जिसे ईद कहा जाता है। यह एक बड़ा जाना-पहचाना लफ़्ज़ है जिसे सुनते ही दिल व दिमाग़ पर एक खुशगवार सा एहसास छा जाता है। इसीलिए यह हर खुशी के मौके के लिए भी इस्तेमाल होने लगा है। कुरआने मजीद ने भी इसे एक खुशी के मौके पर इस्तेमाल किया है।

जनाबे ईसा<sup>ॐ</sup> से उनकी कौम ने कहा कि खुदा उनके लिए आसमान से नेमत नाज़िल करे। आपने इस तरह दुआ की, “परवरदिगार! हमारे ऊपर आसमान से दस्तरख़्वान नाज़िल कर दे ताकि हमारे अव्वल व आख़िर के लिए ईद हो जाए

और तेरी कुदरत की निशानी बन जाए और हमें रिज़्क दे कि तू बेहतरीन रिज़्क देने वाला है।”<sup>(1)</sup> ईद का रूट वर्ड ऊद है जिसके माने पलटने के हैं। ईदुल फ़ित्र को भी शायद इसीलिए ईद कहा गया है कि खुदा के बंदे रोज़े व इबादतों के ज़रिए खुदा की तरफ़ जाते हैं और खुदा की रहमतें बंदों की तरफ़ आती हैं। हज़रत अली<sup>ॐ</sup> ईदुल फ़ित्र के दिन खुत्बे में फ़रमाते हैं, “ऐ खुदा के बंदो! रोज़ा रखने वाले लोगों का सबसे कम अज़्र यह है कि माहे रमज़ान के आख़िरी दिन एक फ़रिश्ता आवाज़ देता है कि ऐ खुदा के बंदो! तुम्हें बशारत दी जाती है कि तुम्हारे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं। इसलिए अब इसके बाद जो कुछ करोगे उसके बारे में ध्यान रखना।” यानी तुम आज से एक नई ज़िंदगी शुरू करने जा रहे हो इसलिए अब कोशिश करो कि दोबारा गुनाहों के जाल में गिरफ़्तार न हो। यह एक मौका था जो तुम्हें मिल गया वरना किसी को नहीं पता कि अगले माह रमज़ान और ईद तक ज़िंदा रहेगा या नहीं।

**रसूल<sup>ॐ</sup> की उम्मत के लिए ख़ास तोहफ़ा**  
रिवायत में है कि यह ईद ख़ास तौर पर रसूल<sup>ॐ</sup> की उम्मत के लिए एक खुदाई तोहफ़ा है।

रसूल<sup>ॐ</sup> अकरम<sup>ॐ</sup> फ़रमाते हैं कि मैं मदीने में दाख़िल हुआ तो मैंने देखा कि इस शहर के लोग जाहिलियत के ज़माने के दो दिनों में खुशियां मनाते थे और खेलते-कूदते थे। लेकिन खुदा ने तुम्हें इन दिनों की जगह पर इनसे बेहतर दिन दिए हैं। ईदुल फ़ित्र और ईदे कुरबान।<sup>(2)</sup>

ज़ाहिर है कि यह तोहफ़ा हकीकत में उन लोगों के लिए है जिन्होंने माहे रमज़ान को खुदा की इताअत व इबादत में बसर किया हो जैसा कि हज़रत अली<sup>ॐ</sup> फ़रमाते हैं, “यह ईद उनके लिए है कि जिनके रोज़े-नमाज़ कुबूल हो गए हों।”

पैग़म्बर<sup>ॐ</sup> की रिवायत से यह बात भी समझ में आती है कि कोई ग़लत रस्म या तरीका ख़त्म करने के लिए उसकी जगह पर कोई दूसरी चीज़ लानी चाहिए। यह एक अहम प्वाइंट है जिसे घरेलू और समाजी ज़िंदगी में सामने रखकर बहुत अच्छे रिज़ल्ट्स हासिल किए जा सकते हैं।

खुदावंदे आलम से दुआ है कि वह हमारी तिलावत, रोज़ों और दूसरी इबादतों को कुबूल फ़रमाए और ईद के दिन को इस तरह खुशी का दिन क़रार दे कि एक दूसरे से गले मिलकर हमारे गिले-शिकवे दूर हो जाएं! आमीन

1-सूर मायदा/114, 2- मीज़ानुल हिकमा, 8/308





# नक्शा तर्क सहर और इफ्तार

माहे रमज़ान 2011 (लखनऊ)

रमज़ान	अगस्त	तर्क सहर	अज़ाने सुबह	माहिर और हज़ार	लखनऊ के वक़्त से ज्यादा	लखनऊ के वक़्त से कमी		
1432	2010	AM	AM	PM	शहर	मिनट	शहर	मिनट
1	2	3:51	4:06	7:06	अहमदाबाद	32	इलाहाबाद	5
2	3	3:51	4:06	7:05	आगरा	12	आज़मगढ़	9
3	4	3:52	4:07	7:04	इन्दौर	21	अयोध्या	5
4	5	3:53	4:08	7:04	उन्नाव	2	बाराबंकी	2
5	6	3:54	4:09	7:03	बदायुं	8	बस्ती	8
6	7	3:55	4:10	7:02	बरेली	6	बनारस	8
7	8	3:55	4:10	7:02	मुम्बई	23	बलिया	12
8	9	3:56	4:11	7:01	बेंगलूर	17	बहराइच	4
9	10	3:57	4:12	7:00	भोपाल	14	बांदा	6
10	11	3:58	4:13	6:59	पीलीभीत	5	भागलपूर	19
11	12	3:58	4:13	6:58	झांसी	10	पटना	18
12	13	3:59	4:14	6:57	हैदराबाद	10	प्रतापगढ़	5
13	14	4:00	4:15	6:57	दिल्ली	15	पुरनीया	27
14	15	4:00	4:15	6:56	देहरादून	12	जौनपुर	8
15	16	4:01	4:16	6:55	रामपूर	8	दरभंगा	20
16	17	4:02	4:17	6:54	श्रीनगर	21	रांची	18
17	18	4:03	4:18	6:53	सहारनपुर	14	छपरा	16
18	19	4:03	4:18	6:52	सीतापुर	4	रायबरेली	4
19	20	4:04	4:19	6:51	शाहजहाँपुर	4	सीवान	14
20	21	4:05	4:20	6:50	अलीगढ़	12	परगना	30
21	22	4:05	4:20	6:49	फतेहपुर	3	गाजीपूर	11
22	23	4:06	4:21	6:48	कानपुर	3	फैजाबाद	5
23	24	4:07	4:22	6:47	गवालियार	12	कोलकाता	31
24	25	4:07	4:22	6:46	मद्रास	3	खीरी	1
25	26	4:08	4:23	6:45	मुरादाबाद	9	गोण्डा	4
26	27	4:09	4:24	6:44	मेरठ	13	गोरखपुर	10
27	28	4:09	4:24	6:43	मुज़फ़्फरनगर	12	मऊ	11
28	29	4:10	4:25	6:42	नागपुर	16	मोनगीर	12
29	30	4:11	4:26	6:41	नैनीताल	6	मिर्ज़ापुर	7
30	31	4:11	4:26	6:40	हरदोई	4	मुज़फ़्फरपुर	19

(मुरतबा: हुज्जतुल इस्लाम मौलाना अदीबुल हिन्दी ताब सराह)

## सहरी की

## दुआ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या मफज़ई इन—द कुरबती। व या गौसी  
इन—द शिद्दती। इलै—क फज़ेअतु, व  
बिकस्तगस्तु, व बि—क लुज़ु, ला—अलूज़ु बि  
सिवाक। वला अतलुबुल फ—र—ज इल्ला मिन्क।  
फ—अगिस्नी व फरिज़ अन्नी। या मय यकबलुल यसीर व यअफू अनिल  
कसीर। इक्बल मिन्निल यसीर। वअफु अन्निल कसीर। इन—न—क  
अन्तल गफूररहीम। अल्लाहुम—म इन्नी अरअलु—क ईमानन तुबाशिरु  
बिहि कल्बी। व यकीनन सादिका। हत्ता आलमु अन्नहू लई युसीबनी  
इल्ला मा कतब—त—ली व रज़िज़नी मिन्नल ऐशि बिमा कसम—त—ली  
या अरहमर्राहिमीन। या उदती फी कुरबती, व या साहिबी फी शिद्दती,  
व या वलिय्यी फी नेअमती, व या गायती फी र—ग—ब—ती,  
अन्तस्सातिरु औरती, वल आमिनु रौअती, वल मुकीलु अरस्ती,  
फगफिरली खतीअती, या अरहमर्राहिमीन।

**तर्जुमा:** ऐ तकलीफ के वक़्त मुझे पनाह देने वाले, ऐ कठिन घड़ी में मेरी  
फरयाद सुनने वाले, मैं तेरी ही पनाह में हूँ और तुझसे ही फरयाद की है,  
तुझसे ही लौ लगाता हूँ, तेरे अलावा किसी से लौ नहीं लगाता और न  
तेरे अलावा किसी से खुशहाली का सवाली हूँ। तो अब तू मेरी फरयाद  
को सुनले और मेरी तकलीफ को दूर करदे। ऐ वह! जो थोड़ी सी नेकी  
को भी कबूल कर लेता है और बहुत ज़्यादा गुनाह माफ़ कर देता है। मेरे  
थोड़े से आमाल को कबूल कर ले और मेरे बहुत सारे गुनाहों को माफ़  
कर दे। तू ही बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। ऐ  
अल्लाह! मैं तुझसे ऐसा ईमान चाहता हूँ कि जो मेरे दिल में जगह बना  
ले और ऐसा सच्चा यकीन देदे कि मैं यह जान लूँ कि जो कुछ भी तूने  
मेरे लिए लिख दिया है उसके अलावा मुझे कुछ नहीं मिल सकता और  
मुझको ऐसी ज़िन्दगी पर राज़ी करदे जो तूने मेरे लिए मोअय्यन कर दी  
है। ऐ सबसे ज़ियादा रहम करने वाले, ऐ तकलीफ के वक़्त मेरी पूंजी,  
सख़्ती में हमदम, ऐ मुझे नेअमत देने वाले और मेरी तबज्जोह के  
मरकज़! तू ही मेरे ऐबों को छुपाने वाला है और डर व दहशत के माहौल  
में इतमीनान देने वाला है। मेरी लगज़िश व ग़लती को बख़्श दे। ऐ रहम  
करने वालों में सबसे ज़्यादा रहम करने वाले।

## इफ्तार की दुआ

अल्लाहुम—म ल—क सुम्तु  
व अला रिज़कि—क अफ़तरतु  
व अलै—क तवक्कलतु।

**तर्जुमा:** परवरदिगार मैंने तेरे लिये रोज़ा रखा और तेरी  
रोज़ी से इफ़तार किया और मैंने तुझ पर तवक्कल किया।





15  
August

*Happy  
Independence Day*